केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 43 बुधवार 2 सितम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

नेपाल ने कहा-मदद नहीं मुआवजा चाहिये

काठमाण्डू (आभा)। नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने साफ किया कि नेपाल वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में बहुत कम योगदान देने के बावजूद दूसरों की ओर से पैदा किए गए जलवायु संकट की सबसे भारी कीमत चुका रहा है।

नेपाल–तिब्बत सीमा पर ग्लेशियर

ढहने से आई विनाशकारी तबाही में 1,000 से ज्यादा मौतों और लगभग 4,000 लोगों के लापता होने के बीच नेपाल ने अपनी अंतरराष्ट्रीय रणनीति में बड़ा बदलाव किया है। नेपाल सरकार ने मानवीय सहायता मांगने के बजाय शीर्ष उत्सर्जक देशों से 'जलवायु मुआवजे' की मांग करने का कड़ा कूटनीतिक रुख अपनाया है।

'द काठमांडू पोस्ट' को दिए इंटरव्यू में नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने साफ किया कि नेपाल वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में नगण्य योगदान देने के बावजूद दूसरों की ओर से पैदा किए गए जलवायु संकट की सबसे भारी कीमत चुका रहा है।

इ. राजेश कुमार श्रीवास्तव बने मण्डल उपाध्यक्ष

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। उत्तर प्रदेश पेंशनर्स कल्याण संस्था, बस्ती मंडल के अध्यक्ष विजय प्रताप पाल ने सहायक अभियंता लोक निर्माण विभाग इ. राजेश कुमार श्रीवास्तव को संस्था के बस्ती मण्डल के उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया है।

कार्यकारिणी सदस्य जलालुद्दीन कुरैशी की सहमति से इ. राजेश कुमार श्रीवास्तव को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इ. राजेश कुमार श्रीवास्तव को मण्डल के उपाध्यक्ष बनाये जाने पर विजय प्रताप पाल, रमेश चंद्र

श्रीवास्तव, प्रेम शंकर लाल श्रीवास्तव, गौरी शंकर लाल चंद्र वर्मा, बद्री प्रसाद चौधरी सहित अनेक पदाधिकारियों ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

हरीश द्विवेदी ने कार्यकर्ताओं को दिया नयी ताकत–रामायण रघुनाथ सिंह

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी का बस्ती शहर में देर रात तक स्वागत कार्यक्रम जारी रहा। इसी कड़ी में बनकटी ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि रामायण रघुनाथ सिंह ने गांधीनगर में हरीश द्विवेदी का फूल मालाओं के साथ स्वागत किया। कहा कि राष्ट्रीय महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण दायित्व मिलने से कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार हुआ है। संगठन के प्रति हरीश द्विवेदी का समर्पण, सरल व्यक्तित्व एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आत्मीयता से निश्चित रूप से भाजपा की और ताकत बढी है।

ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि रामायण रघुनाथ सिंह के साथ राष्ट्रीय महामंत्री पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी का स्वागत करने वालों में बनकटी मंडल अध्यक्ष अंकित पाण्डेय, पूर्व मंडल अध्यक्ष जगदम्बा शुक्ल , ओमप्रकाश शुक्ला, डा. आर.पी. शुक्ला, जनार्दन शुक्ला , अखिलेश शुक्ला, रामवृक्ष, सुनील पाण्डेय , बब्लू दूबे , राजेन्द्र चौधरी, अरविंद गुरू , सर्वेश चौधरी, शमीम अहमद सिद्दीकी, अभय सिंह, अभिषेक सिंह , शुभम, रवींद्र पाण्डेय, नीरज पाण्डेय , सी.पी. राज जी, श्री गुड्डू गौड जी, शैलेंद्र चौधरी, रामजन्म चौधरी, रामकिशोर चौधरी, फूलचंद चौधरी, दीपक शर्मा, उमेश शर्मा, राहुल चौधरी, दीपचंद शर्मा, सुजीत सिंह छोटू, भूपेश कुमार, वीरेंद्र यादव , अवधेश शुक्ला, अरुणेश शुक्ला , राम सिधारे निषाद, घनश्याम शुक्ला, राम दास शुक्ला, रामकेश भारती , तुफानी निषाद के साथ ही भाजपा के अनेक नेता, पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल रहे।

वीसी पाण्डेय के संयोजन में हरीश द्विवेदी का भव्य स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी के बस्ती आगमन पर भाजपा नेता वृन्दावन चंद्रभान पाण्डेय के संयोजन में समर्थकों ने स्वागत समारोह का आयोजन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने फूल–मालाओं से उनका स्वागत कर पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। कार्यक्रम में भाजपा नेता एवं कार्यकर्ताओं ने हरीश द्विवेदी को राष्ट्रीय महामंत्री बनाए जाने पर प्रसन्नता जताते हुए उन्हें बधाई दी।

वृन्दावन चंद्रभान पाण्डेय ने दूरभाष पर बताया कि हरीश द्विवेदी को संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलना बस्ती जनपद के लिए गौरव की बात है। उनके नेतृत्व में पार्टी संगठन को और मजबूती मिलेगी। स्वागत समारोह में दिलीप पाण्डेय, रविन्द्र उपाध्याय, संजय गुप्ता, अजीत कुमार, विजय पाण्डेय सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं समर्थक मौजूद रहे। कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ भाजपा और हरीश द्विवेदी के समर्थन में नारे लगाए।

यूजीसी का नया कानून वापस लिये जाने सहित 7 सूत्रीय मांगो को लेकर मेधा का धरना जारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मेधा पार्टी द्वारा यूजीसी के नये कानून की वापसी सहित 7 सूत्रीय मांगों को लेकर गांधीकला भवन परिसर में बापू प्रतिमा के निकट चल रहा धरना 9 वें दिन भी जारी रहा। मेधा पार्टी के केन्द्रीय प्रवक्ता दीन दयाल त्रिपाठी ने कहा कि पार्टी गरीबों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार दिलाने के अभियान को आगे बढ़ा रही है।

मेधा पार्टी की प्रमुख मांगों में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में एकल पदों पर आरक्षण व्यवस्था समाप्त किये जाने यूजीसी रेग्यूलेशन 2026 को वापस लिये जाने, दशमोत्तर कक्षाओं में सभी जातियों के विद्यार्थियों को आर्थिक आधार पर शुल्क प्रतिपूर्ति एवं छात्रवृत्ति की सुविधा, निजी स्कूलों में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत मुफ्त दाखिले को सरल बनाना तथा शिक्षा–प्रशिक्षण संस्थानों

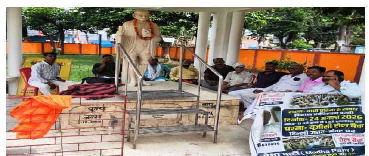

में समान अवसर सुनिश्चित करना, अनुसूचित जाति, अनसूचित जन जाति के गरीब छात्रों को दशमोत्तर कक्षाओं में निजी शिक्षण, प्रशिक्षण संस्थानों में निःशुल्क प्रवेश दिये जाने आदि की शामिल है। श्री तिवारी ने कहा कि शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल करने के लिए पार्टी लगातार संघर्ष करती रहेगी। गरीब बच्चों को बेहतर शिक्षा और उनके अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष जारी रहेगा।

धरने के 9 वे दिन मुख्य रूप से बापू प्रतिमा के निकट मुख्य रूप से उमेश पाण्डेय मुन्ना, पं. सुनील भट्ट, सन्तोष शुक्ल, विशाल सिंह, अंकित सिंह, रवि शुक्ल, कार्तिकेय तिवारी, गिरीश चन्द्र गिरी, नागेन्द्र मिश्र, दीपक, अजय कुमार चौधरी, राहुल त्रिपाठी, जावेद अहमद, विपुल सिंह, सन्तोष कुमार पाण्डेय, रामरीका पाण्डेय, विजय कुमार पाल, दिनेश कुमार चौधरी, दीपक के साथ ही मेधा के अनेक पदाधिकारी, सदस्य और विभिन्न संगठनों के लोग शामिल रहे।

हरीश द्विवेदी के ऐतिहासिक स्वागत से भाजपा कार्यकर्ताओं में बढा उत्साह–इ. अरविन्द पाल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी के बस्ती प्रथम आगमन पर भाजपा नेता अरविंद पाल के नेतृत्व में हजारों समर्थकों ने उनका भव्य स्वागत किया। समर्थकों ने फूल–मालाओं से स्वागत करते हुए जोरदार नारेबाजी की, जिससे पूरा वातावरण उत्साह और जोश से भर गया।

इस दौरान ई. अरविंद पाल ने कहा कि हरीश द्विवेदी को भाजपा का राष्ट्रीय महामंत्री बनाए जाने से बस्ती जनपद सहित पूरे पूर्वांचल के

कार्यकर्ताओं में उत्साह है। उन्होंने कहा कि पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलने से जिले का गौरव बढ़ा है और कार्यकर्ताओं को नई ऊर्जा मिली है।

हरीश द्विवेदी ने स्वागत के लिए अरविंद पाल एवं सभी समर्थकों का आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी की सक्रियता से पूर्वान्चल में और मजबूत होगी भाजपा- जय चौबे

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती।। आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को धार देने के क्रम में खलीलाबाद के पूर्व विधायक दिग्विजय नारायण उर्फ जय चौबे ने जनपद बस्ती के ऐतिहासिक फुटहिया चौराहे पर अपनी सांगठनिक ताकत और जनाधार का जोरदार प्रदर्शन किया। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी के आगमन पर पूर्व विधायक जय चौबे के नेतृत्व में उमड़े हजारों कार्यकर्ताओं के हुजूम ने उनका भव्य और अभूतपूर्व स्वागत किया। इस दौरान पूरा फुटहिया चौराहा ढोल–नगाड़ों की थाप, गाजे–बाजे और गगनभेदी नारों से गुंजायमान हो उठा। जय चौबे ने समर्थकों संग राष्ट्रीय महामंत्री का विशाल

फूल–मालाओं और अंगवस्त्र से गर्मजोशी से अभिनंदन किया। कहा कि हरीश द्विवेदी की सक्रियता से पूर्वान्चल में और मजबूत होगी भाजपा।

फुटहिया चौराहे पर जुटी कार्यकर्ताओं की इस भारी भीड़ को पूर्वांचल की राजनीति में मिशन 2027 के लिए एक बड़े शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा जा रहा है।

जयन्ती पर याद किये गये चित्रलेखा के रचनाकर भगवती चरण वर्मा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। साहित्यिक संस्था अदबी संगम द्वारा उपन्यास सम्राट बाबू भगवती चरण वर्मा के जयन्ती अवसर पर प्रेस क्लब सभागार में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, मुशायरे का आयोजन वरिष्ठ कवि डॉ. राम कृष्ण लाल 'जगमग' की अध्यक्षता में किया गया।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ चिकित्सक, साहित्यकार डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि कालजयी उपन्यास चित्रलेखा के रचनाकार बाबू भगवतीचरण वर्मा की कई कृतियां अमर है। कहा कि समाज को जीवन जीने का सही मार्ग साहित्य की रोशनी में ही दिखता है। उनकी रचना ' किसी तरह है वक्त काटना, आपस में है प्रेम बाटना, चीनी इतनी हुई है मंहगी, त्योहारों में नमक चाटना, को सराहना मिली।

विशिष्ट अतिथि साहित्यकार बी. के. मिश्र ने उपन्यास सम्राट बाबू भगवती चरण वर्मा का हिंदी साहित्य में सर्वोच्च स्थान है। उनकी लेखनी ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक सहित विभिन्न साहित्यिक विधाओं को समृद्ध किया। नयी पीढी को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये।

–कवि सम्मेलन, मुशायरा– चीनी इतनी हुई है मंहगी, त्योहारों में नमक चाटना

कार्यक्रम के दूसरे चरण में डॉ. अफजल हुसेन अफजल के संचालन और कवि डॉ. रामकृष्ण लाल जगमग की अध्यक्षता में आयोजित कवि सम्मेलन में बाराबंकी से ओज के कवि ओ पी वर्मा ओम जी, बनारस से कवियित्री प्रियंका अग्निहोत्री , गोंडा से ईश्वर चन्द्र विद्या वाचस्पति, गोरखपुर से सुम्बुल हाशमी, मगहर से हशमत अजीजी, मेहदावल से छेदी रहबर, राजेन्द्र बहादुर हंस , वरिष्ठ शायर हरीश दरवेश, शायर विनोद उपाध्याय हर्षित ,सलीम बस्तवी अजीजी, गजलकार डॉ पारस वैद्य, दिव्या मिश्रा, हरकेश प्रजापति, डॉ राजेंद्र सिंह राही, तौआब अली, सुशील सिंह पथिक, जगदंबा प्रसाद भावुक, ओम प्रकाश भारती, विजय श्रीवास्तव हसरत बस्तवी , रवि गुप्ता 'नैतिक' ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम संयोजक दीपक सिंह प्रेमी ने अतिथियों, श्रोताओं के प्रति आभार ज्ञापन किया।

सनातन परम्परा में शंख ध्वनि के साथ हुआ भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हरीश द्विवेदी का स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता

बस्ती। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी के गृह जनपद आगमन पर बस्ती की सीमा से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में हुए स्वागत कार्यक्रमों के बीच हर्रैया–छावनी क्षेत्र में हुआ एक स्वागत कार्यक्रम खास चर्चा का विषय बना रहा। टोल प्लाजा चौकड़ी पर वरिष्ठ भाजपा नेता चन्द्रमणि पाण्डेय 'सुदामा' के नेतृत्व में आयोजित स्वागत में सैकड़ों छात्राओं ने फूल एवं आरती की थालियां लेकर पारंपरिक तरीके से अभिनंदन किया। वैदिक मंत्रोच्चार, शंखनाद और सनातनी परंपरा के अनुरूप हुए आयोजन ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

क्षेत्रीय लोगों के अनुसार, स्वागत में हर्रैया एवं छावनी विकासखंड के विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, विद्यालयों के प्रबंधक, प्रधानाचार्य एवं शिक्षक सहित हजारों लोग छह घंटे से अधिक समय तक हरीश द्विवेदी के आगमन की प्रतीक्षा करते रहे। क्षेत्रवासियों ने कहा कि राजनीतिक स्वागत कार्यक्रमों में भीड़, मंच, माइक, माल्यार्पण, बुल्डोजर से पुष्पवर्षा और मनोरंजन कार्यक्रम तो सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं, लेकिन इतनी लंबी प्रतीक्षा के बावजूद अनुशासित ढंग से सनातनी परंपरा के अनुरूप भक्तिमय वातावरण में हुआ स्वागत उन्होंने पहली बार देखा।

ज्ञात हो कि हरीश द्विवेदी के स्वागत के लिए पूरे जनपद में कुल 151 स्थानों पर अलग–अलग कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों को जिम्मेदारी दी गई थी। घघौवा पुल पर जिले की सीमा से लेकर विक्रमजोत, छावनी, हर्रैया और कप्तानगंज तक विभिन्न स्थानों पर जोरदार स्वागत हुआ। कई स्थानों पर बुल्डोजर से पुष्पवर्षा भी की गई। मुरादीपुर चौराहे पर वरुण सिंह के नेतृत्व में हुए स्वागत को भी लोगों ने खासा सराहा और वहां का दृश्य दीपावली जैसा नजर आया।

हालांकि, इन सभी आयोजनों के बीच टोल प्लाजा चौकड़ी पर चन्द्रमणि पाण्डेय 'सुदामा' के नेतृत्व में हुआ स्वागत अपनी अलग शैली के कारण चर्चा में रहा। यहां स्वागत के लिए सैकड़ों मालाओं के साथ 51 किलो की विशाल माला और करीब 11 किलो गुलाब की पंखुड़ियों की व्यवस्था की गई थी। आयोजन स्थल पर न कोई भव्य पंडाल था, न बड़ा मंच, न बुल्डोजर और न ही तामझाम वाला मनोरंजन कार्यक्रम। इसके बावजूद बड़ी संख्या में लोग स्वयं पहुंचते रहे। विशेष आकर्षण का केंद्र कालेज आफ फार्मेसी की सैकड़ों छात्राएं रहीं, जो हाथों में फूल एवं आरती की थालियां लेकर कतारबद्ध खड़ी थीं। क्षेत्रीय पुरोहितों के साथ अयोध्या धाम से आए आचार्यों ने वैदिक मंत्रोच्चार एवं शंखनाद किया। इससे स्वागत स्थल पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण बन गया।

कार्यक्रम में क्षेत्र के दर्जनों विद्यालयों के प्रबंधक, प्रधानाचार्य एवं शिक्षक, ग्राम प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्य भी मौजूद रहे। कालेज आफ फार्मेसी से जुड़े मोहम्मद शहजाद, गजाधर सिंह, अंगद सिंह के साथ विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं प्रबंधकों की सहभागिता भी देखने को मिली। अंगद सिंह इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य सुभाष त्रिपाठी, यूनिक एकेडमी के गिरजेश मिश्र और पैरामाउंट के बी. एन. वर्मा सहित क्षेत्र के कई शिक्षाविद एवं शिक्षण संस्थानों से जुड़े लोग आयोजन में शामिल रहे।

प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक में गूंजा समस्याओं के निस्तारण न होने का मुद्दा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । मंगलवार को उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक प्रेस क्लब सभागार में जिलाध्यक्ष उदयशंकर शुक्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय और प्रदेशीय संगठन पर चर्चा के साथ ही जनपद के शिक्षक समस्याओं पर विचार करने और निस्तारण के लिये संघर्ष तेज करने का निर्णय लिया गया।

बैठक को सम्बोधित करते हुये संघ जिलाध्यक्ष उदयशंकर शुक्ल ने कहा कि 1 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक सदस्यता अभियान चलाया जायेगा। इसके बाद सभी विकास क्षेत्रों में शैक्षिक सम्मेलन आयोजित कर संगठन का विस्तार किया जायेगा। कहा कि विपरीत समय में

-1 सितम्बर से शुरू हुआ सदस्यता अभियान
-समस्याओं का निस्तारण न हुआ तो आन्दोलन- उदयशंकर शुक्ल

मजबूत संगठन और परस्पर एकजुटता से ही समस्याओं का प्रभावी समाधान हो सकेगा। कहा कि बीएसए ने विद्यालय परिसर में अराजक लोगों के प्रवेश, वीडियो बनाने, फोटो खीचने पर जो रोक लगाया है शिक्षक उसका पूरा पालन करे। संगठन उनके साथ है।

जिला मंत्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष आनन्द दूबे, कोषाध्यक्ष अभय सिंह यादव, साऊंघाट ब्लाक अध्यक्ष अभिषेक उपाध्याय, कुदरहा ब्लाक अध्यक्ष ओम प्रकाश पाण्डेय, परसरामपुर ब्लाक अध्यक्ष नरेन्द्र दूबे, मंत्री राजीव पाण्डेय, रूधौली अध्यक्ष रजनीश मिश्र, बहादुरपुर ब्लाक अध्यक्ष रीता शुक्ला, पटेश्वरी प्रसाद निषाद, विनोद यादव, सन्तोष शुक्ल, सतीश शंकर शुक्ल, प्रदीप मिश्र, ज्ञानेश्वर शुक्ल आदि ने सम्बोधित करते हुये शिक्षक समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। जोर दिया कि शिक्षकों की वरिष्ठता सूची, प्रोन्नत वेतनमान, शिक्षकों की पदोन्नित, शिक्षा मित्रों के स्थानान्तरण आदेश आदि समस्याओं का निस्तारण समय से कराया जाय। चेतावनी दिया कि शीघ्र समाधान न हुआ तो संघ आन्दोलन को बाध्य होगा।

यह जानकारी देते हुये जिला प्रवक्ता सूर्य प्रकाश शुक्ल ने बताया कि बैठक में मुख्य रूप से नन्दकिशोर चौधरी, मो. सलाम, ओम प्रकाश, गौरव द्विवेदी, हरीश प्रसाद चौधरी, अमरेश कुमार द्विवेदी, कृष्णकुमार, गौरव कुमार त्रिपाठी, अमित कुमार पाण्डेय, गिरजेश उपाध्याय, अनिल कुमार सिंह, अजय भारती, लालेन्द्र कुमार कन्नौजिया, चन्द्रिका प्रसाद सिंह, रवि प्रताप सिंह, नवीन कुमार, आदित्यनाथ त्रिपाठी, मंगेश राजभर, प्रेमशंकर वर्मा के साथ ही बड़ी संख्या में शिक्षक और संघ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

नाबालिग बेटी के अपहरण का आरोप, जेवर व नकदी ले जाने की शिकायत, एसपी से कार्रवाई की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के कड़र खास गांव निवासी एक महिला ने अपनी 17 वर्षीय नाबालिग बेटी के अपहरण का आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर बेटी की बरामदगी और आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। एसपी को दिए शिकायती पत्र के अनुसार, महिला का आरोप है कि 27 जुलाई 2026 की सुबह करीब 9 बजे गांव के ही एक युवक ने उसकी नाबालिग बेटी को बहला–फुसलाकर अपने साथ ले गया। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इसके बाद आरोपी ने कथित तौर पर आपत्तिजनक वीडियो बनाकर रखा और फेसबुक व व्हाट्सऐप के माध्यम से उसे दबाव में रखा। पत्र में यह भी कहा गया है कि बेटी डर के कारण आरोपी के साथ रहने को

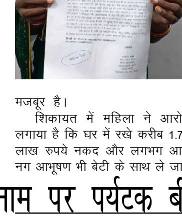

मजबूर है।

शिकायत में महिला ने आरोप लगाया है कि घर में रखे करीब 1.70 लाख रुपये नकद और लगभग आठ नग आभूषण भी बेटी के साथ ले जाए गए। महिला के मुताबिक, आरोपी युवक पहले से उसकी बेटी के पीछे पड़ा था और समझाने के बावजूद नहीं माना।

शिकायतकर्ता ने बताया कि 31 जुलाई 2026 को उसकी बेटी ने एक मोबाइल नंबर से बातचीत की और कथित तौर पर बताया कि वह दिल्ली में है। इससे परिवार को उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई। प्रार्थना पत्र में एक अन्य व्यक्ति समेत कई लोगों पर घटना में शामिल होने का आरोप लगाया गया है।

महिला ने पुलिस अधीक्षक से मामले में मुकदमा दर्ज कर नाबालिग बेटी को जल्द बरामद करने तथा आरोपों की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। शिकायतकर्ता ने यह भी आशंका जताई है कि बेटी के साथ कोई अनहोनी हो सकती है।

विदेश भेजने के नाम पर पर्यटक बीजा देकर धोखाधड़ी

–पैसा वापस मांगने पर जान से मारने की धमकीः पीड़ित ने किया सपा नेता के खिलाफ एसपी से की शिकायत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लालगंज थाना क्षेत्र के ग्राम अकेला कुबेरपुर निवासी आकाश पुत्र लालमन ने पुलिस अधीक्षक बस्ती को प्रार्थना पत्र देकर लालगंज थाना क्षेत्र के सुकरौली निवासी सपा नेता पप्पू यादव और उनके भाई प्रिंस यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पीड़ित का आरोप है कि विदेश भेजने के नाम पर उससे बड़ी रकम ली गई, लेकिन उसे मलेशिया पहुंचने के बाद कथित तौर पर पर्यटक वीजा पर भेजे जाने की जानकारी हुई। वापस लौटने के बाद जब उसने अपनी रकम और पासपोर्ट वापस मांगा तो उसे धमकाया जा रहा है।

एसपी को दिए शिकायती पत्र के मुताबिक, आकाश मजदूरी कर अपना जीवन–यापन करता है। उसका आरोप है कि जुलाई 2025 में पप्पू यादव व उनके भाई प्रिंस यादव ने उसे विदेश भेजने की बात कही और इसके लिए रकम की मांग की। इसके बाद उसके बैंक खाते से अलग–अलग तारीखों में गूगल–पे के माध्यम से 3,000, 20,000, 30,000, 50,000 और 12,000 रुपये लिए गए। इसके अलावा पीड़ित ने एक लाख रुपये नकद दिए जाने का भी दावा किया है।

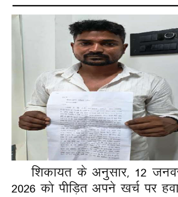

शिकायत के अनुसार, 12 जनवरी 2026 को पीड़ित अपने खर्च पर हवाई यात्रा कर लखनऊ पहुंचा और वहां से हैदराबाद होते हुए बेंगलुरु गया। आरोप है कि बेंगलुरु एयरपोर्ट पर उसे अंतिम समय में वीजा दिया गया और विमान में बैठाया गया। पीड़ित का कहना है कि उससे कहा गया था कि यही विमान मलेशिया जाएगा, लेकिन बाद में वह 16 जनवरी 2026 को मलेशिया के कुआलालंपुर एयरपोर्ट पहुंचा, जहां कथित तौर पर उसे पता चला कि उसे टूरिस्ट वीजा पर भेजा गया है।

आकाश का आरोप है कि मलेशिया जाने से पहले हिंदुस्तान के भीतर लखनऊ, हैदराबाद और बेंगलुरु की हवाई यात्रा में भी उसका करीब 35 हजार रुपये अतिरिक्त खर्च हुआ। शिकायत में यह भी कहा गया है कि मलेशिया पहुंचने के चार दिन बाद वह अपने खर्च पर वापस भारत आया और संबंधित व्यक्ति से संपर्क कर पासपोर्ट व पैसा वापस मांगा।

पीड़ित के मुताबिक, इस पर आरोपी ने उसका पासपोर्ट अपने पास रख लिया और जल्दबाजी में कागज बदल जाने की बात कहते हुए दोबारा भेजने का आश्वासन दिया। आकाश का आरोप है कि जनवरी 2026 से वह पासपोर्ट और अपनी रकम वापस पाने के लिए परेशान है। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि जब वह अपने पैसे और दस्तावेज मांगता है तो उसे जानमाल की धमकी दी जाती है तथा विदेश भेजने के नाम पर लिए गए पैसे वापस नहीं किए जा रहे हैं। पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक से मामले की जांच कर पप्पू यादव व प्रिंस यादव के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई करने और अपना पासपोर्ट व रकम वापस दिलाने की मांग की है।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 2 सितम्बर 2026 बुधवार

सम्पादकीय

एक और निर्भया से दरिन्दगी

एक बार फिर बारह साल पुराने निर्भया कांड की पुनरावृत्ति हुई है। निर्भयाकांड में दिसंबर 2012 में 23 साल की युवती के साथ क्रूरता से गैंगरेप हुआ था, जिसकी बाद में सिंगापुर के एक अस्पताल में मौत हो गई थी। इस घटना के बाद देश में व्यापक आक्रोश उभरा था। यौन हिंसा के खिलाफ कानून कठोर किए गए। इस कांड में साल 2020 में चार अपराधियों को फांसी की सजा दी गई थी। लेकिन सवाल यह है कि क्या सख्त कानून और कठोर सजाओं के बाद ऐसे अपराधों पर अंकुश लगा? दुखद है कि एक बार फिर निर्भयाकांड की पुनरावृत्ति हुई । अकेली नाबालिग लड़की, खाली बस और चलती बस में चालक–परिचालक द्वारा गैंग रेप। उ.प्र. की एक सोलह साल की लड़की किसी बात पर मां की डांट से क्षुब्ध हो घर छोड़कर अपने रिश्तेदार से मिलने नोयडा सेक्टर–63 के लिये चली। लेकिन रात के अंधेरे और बारिश के मौसम की गफलत में नोयडा के परी चौक पर उतर गई। सेक्टर–63 जाने के लिये उसने जिस बस को रुकवाया, उसमें बैठे दरिंदों ने बस के वहीं जाने की बात कहकर उसे बैठा लिया। पर्दे लगी स्लीपर बस में लड़की के बैठते ही परिचालक ने उससे छेड़छाड़ शुरू कर दी। चालक–परिचालक ने दुराचार किया और विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी। करीब 47 किलोमीटर के सफर में उसके साथ यौन हिंसा हुई। अपराधी उसे कश्मीरी गेट के निकट रिंग रोड में छोड़कर फरार हो गए। किशोरी ने साहस दिखाते हुए रात ही में कश्मीरी गेट पुलिस को वारदात की सूचना दी। पुलिस ने इस मामले में टीम बनाकर पड़ताल की। बस की पहचान व रूट की जानकारी सीसीटीवी कैमरों के जरिये की गई। चालक–परिचालक को तिमारपुर की बस पार्किंग से गिरफ्तार किया गया। फोरेंसिक जांच के लिये बस को भी कब्जे में लिया गया है। लेकिन सवाल है कि चार अगस्त की घटना को पुलिस ने क्यों पर्दे में रखा? आखिर क्यों हादसे की सार्वजनिक जानकारी 31 अगस्त को मीडिया को दी गई?

वहीं दूसरी ओर इंसान के पतन की पराकाष्ठा दिल्ली के बवाना इलाके में सामने आई, जहां स्कूल बस चालक को नर्सरी की एक बच्ची का यौन उत्पीड़न करने पर गिरफ्तार किया गया है। घटना 19 अगस्त को सामने आई जब नर्सरी की छात्रा के परिजनों ने उसके निजी अंगों पर चोट के निशान देखे। बच्ची ने अपनी मां को स्कूल के एक गंदे अंकल के बारे में बताया जो उसे चॉकलेट देता था। परिजनों द्वारा पुलिस को सूचित करने के बाद बस चालक के खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज करके उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। शुरुआती जांच के अनुसार बच्ची से चार बार यौन दुर्व्यवहार किया गया था। किसी सभ्य समाज को शर्मसार करने वाली ये घटनाएं जहां समाज में भरोसे को तोड़ती हैं, वहीं कानून व्यवस्था के प्रश्न को भी उठाती हैं। इन मुद्दों पर राजनीति भी जमकर शुरू हो गई है। कहा जा रहा है कि डबल इंजन सरकार में दिल्ली रेप कैपिटल बनती जा रही है। इसके बावजूद कि दिल्ली में एक महिला मुख्यमंत्री हैं। वहीं कुछ राजनीतिक दल आरोप लगा रहे हैं कि जनता की सुरक्षा व अपराध रोकने के कार्य के बजाय पुलिस पर अन्य कार्यों का बोझ डाला जा रहा है। वहीं सत्ता पक्ष के नेताओं का कहना है कि पुलिस ने मामले की तह तक जाकर अपराधियों को समय रहते गिरफ्तार करके कानूनी कार्रवाई में तेजी दिखायी है। साथ ही लोगों से अपील की है कि वे जागरूक रहें और ऐसी घटनाओं की जानकारी तुरंत पुलिस को दें। लेकिन मुख्य सवाल यह है कि भारत में यौन लिप्साओं के विस्फोट की असली वजह क्या है? क्यों किन्हीं कमजोर स्थितियों में महिला, लड़की व बच्ची की उम्र का भी लिहाज न कर, यौन हिंसा का शिकार बनाया जा रहा है? हमारा समाज पतनोन्मुखी क्यों होता जा रहा है? क्या यौन अपराधों के मूल में मोबाइल में इंटरनेट के जरिये परोसी जा रही यौन उत्तेजक सामग्री है? देश के समाज विज्ञानियों को इस गंभीर प्रश्न पर मंथन करना होगा।

खतरे में गिद्ध

जहां कई दशकों तक गिद्धों की सुरक्षा से जुड़ी मुख्य चिंता रसायनों से होने वाले खतरों पर केंद्रित थी, वहीं भारत में बिजली के बढ़ते बुनियादी ढांचे से बिजली का झटका लगने का खतरा अब उससे भी बड़ी चिंता का सबब हो सकता है। 1990 के दशक में, भारत में गिद्धों की तादाद में आई गिरावट दुनिया की सबसे बड़ी गिरावटों में से एक रही। 1980 के दशक में इनकी संख्या लगभग चार करोड़ थी, जो 2007 तक 99.5 फीसदी घटकर बहुत कम रह गई। सफेद पुट्ठे वाले, भारतीय और पतली चोंच वाले गिद्धों का तो तकरीबन सफाया ही हो गया। इसके लिए जिम्मेदार डिक्लोफेनाक नाम की दवा थी, जो मवेशियों के लिए एक दर्द निवारक है और गिद्धों के गुर्दों को बर्बाद कर देती है। लिहाजा सरकार ने डिक्लोफेनाक के इस्तेमाल पर रोक लगा दी और 2023 में एसिक्लोफेनाक, केटोप्रोफेन तथा कुछ अन्य एनएसएआईडी से होने वाले खतरों को कम करने के लिए इन पर भी अतिरिक्त प्रतिबंध लगाए गए। पक्षियों की संख्या घटने से मरे हुए जानवरों के शव ज्यादा समय तक खुले में पड़े रहे, जिससे आवारा कुत्तों की आबादी बढ़ी और रेबीज फैलने लगा। 'अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू' में प्रकाशित 2024 के एक अध्ययन के मुताबिक, इस वजह से इंसानों की मौत में चार फीसदी का इजाफा हुआ और इससे भारत को हर साल 69.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ। भले ही बिजली का झटका लगने से होने वाली मौतें एनएसएआईडी दवाओं से होने वाली मौतों जितनी ज्यादा तो नहीं हैं, फिर भी गिद्धों की तादाद की नाजुक स्थिति और बिजली के असुरक्षित बुनियादी ढांचे के तेजी से फैलने की वजह से इस पर जल्द कार्रवाई की जरूरत है। साल 2025 में एक सरकारी सर्वेक्षण में बताया गया कि गिद्ध घोंसला बनाने की अपनी पुरानी जगहों में से सिर्फ 50 फीसदी जगहों पर ही घोंसले बना रहे हैं। यह कोई मामूली विवरण नहीं है कि इन शिकारी पक्षियों (रैप्टर) के पंखों का फैलाव इतना ज्यादा होता है कि एक बड़ा पक्षी एक ही वक्त में दो सुचालकों (कंडक्टर) के संपर्क में आ सकता है। उनकी ऊंची जगहों पर बैठने की आदत होती है और वे खुले इलाकों की ओर आकर्षित होते हैं। वे ऐसी जगहों पर इकट्ठा होते हैं जहां आसानी से खाना मिल सके। बिजली के उपकरणों के आस–पास खाने का कचरा फेंकने से यह खतरा और बढ़ जाता है।

'जर्नल ऑफ थ्रेटन्ड टैक्सा' में छपे एक हालिया अध्ययन के आधार पर 'द हिंदू' की रिपोर्ट के मुताबिक, "उत्तराखंड के देहरादून के पास हाई–टेंशन वाली बिजली के बुनियादी ढांचे से 2.4 किलोमीटर दूर मवेशियों के शवों के ढेर को दूसरी जगह ले जाने से शायद इन बड़े मुर्दाखोर पक्षियों (स्कैवेंजर्स) को बिजली का झटका लगने से बचाया जा सका है।" 'स्टेट क्लाइमेट रेजिलिएंट पावर सिस्टम डेवलपमेंट प्रोजेक्ट' के लिए तैयार की गई एक रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि हाई–वोल्टेज लाइनों के बजाय मीडियम–वोल्टेज लाइनों से मिस्र के गिद्धों (इजिप्टियन वल्चर) और कुछ मैदानी बाजों (स्टेपी ईगल) को बिजली का झटका लगा था। शोध से पता चला है कि अकेले बिजली का झटका लगने से होने वाली लगातार मौतों के कारण किसी इलाके से पक्षियों की आबादी लुप्त हो सकती है।

आरक्षण बनाम योग्यता नहीं, असमान अवसर बनाम समान अवसर

–अखिल कुमार यादव–

आरक्षण का नाम आते ही भारतीय समाज में बहस शुरू हो जाती है। कोई इसे सामाजिक न्याय का साधन मानता है, कोई आर्थिक सहायता से जोड़ता है और कोई इसे योग्यता के प्रश्न से जोड़कर देखता है। लेकिन आरक्षण की वास्तविक अवधारणा को समझने के लिए इन सतही धारणाओं से आगे जाना होगा। सबसे पहले यह समझना होगा कि आरक्षण गरीबी हटाओ योजना नहीं है और न ही इसका मूल उद्देश्य किसी व्यक्ति को आर्थिक सहायता देना है। आरक्षण का मूल स्वरूप सामाजिक समानता, समान अवसर और सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करना है। गरीबी और सामाजिक वंचना एक–दूसरे से संबंधित हो सकती हैं, लेकिन दोनों समान नहीं हैं। गरीबी मुख्य रूप से आर्थिक स्थिति से जुड़ा प्रश्न है, जबकि सामाजिक वंचना का संबंध व्यक्ति या समुदाय की सामाजिक स्थिति, ऐतिहासिक परिस्थितियों, अवसरों तक पहुंच और संस्थागत प्रतिनिधित्व से होता है। किसी गरीब परिवार को आर्थिक सहायता देकर उसकी तत्काल आर्थिक समस्या कम की जा सकती है, लेकिन इससे यह जरूरी नहीं कि उस परिवार या उसके सामाजिक वर्ग को शिक्षा, प्रशासन, रोजगार और निर्णय लेने वाली संस्थाओं में उचित प्रतिनिधित्व भी मिल जाए। इसलिए आर्थिक पिछड़ेपन के लिए आर्थिक नीतियां और सामाजिक वंचना के लिए सामाजिक न्याय की नीतियां आवश्यक हैं। भारत का इतिहास सामाजिक असमानताओं की लंबी यात्रा का इतिहास भी रहा है। समाज के अनेक वर्गों को लंबे समय तक शिक्षा, ज्ञान, प्रशासन, संसाधनों, सत्ता और सार्वजनिक जीवन में समान अवसर नहीं मिले। जब किसी समुदाय की कई पीढ़ियां अवसरों से दूर रहती हैं, तो केवल कानूनी रूप से यह घोषणा कर देना कि अब सभी समान हैं, वास्तविक समानता स्थापित नहीं कर देता। वास्तविक समानता के लिए उन ऐतिहासिक असमानताओं के प्रभाव को भी समझना पड़ता है। यहीं आरक्षण की आवश्यकता सामने आती है।

समानता का अर्थ हमेशा यह नहीं होता कि हर व्यक्ति के साथ बिल्कुल एक जैसा व्यवहार किया जाए। यदि दो व्यक्तियों की शुरुआती परिस्थितियां अलग–अलग हैं और दोनों को बिना किसी अंतर के एक ही प्रतियोगिता में उतार दिया जाए, तो परिणाम भले समान प्रक्रिया से निकले, लेकिन अवसरों की वास्तविक समानता सुनिश्चित नहीं होगी। जिस बच्चे के पास बचपन से अच्छी शिक्षा, पुस्तकें, इंटरनेट, पौष्टिक भोजन, सुरक्षित वातावरण, निजी शिक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साधन उपलब्ध रहे हों और जिस बच्चे ने सीमित संसाधनों के बीच अपनी पढ़ाई पूरी की हो, दोनों को केवल परीक्षा के अंतिम परिणाम के आधार पर देखना सामाजिक परिस्थितियों की पूरी तस्वीर नहीं बताता। इसलिए आरक्षण को योग्यता के विरोध के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं है। योग्यता केवल परीक्षा के अंक का नाम नहीं हैय योग्यता के निर्माण में अवसरों की भी बड़ी भूमिका होती है। आरक्षण उन परिस्थितियों को संतुलित करने का प्रयास है, जहां ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से कुछ वर्गों की संस्थागत भागीदारी लंबे समय तक सीमित रही। आरक्षण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आर्थिक लाभ नहीं बल्कि प्रतिनिधित्व है। लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व का अपना विशेष महत्व है। यदि समाज के विभिन्न वर्गों की उपस्थिति प्रशासन, शिक्षा, सरकारी सेवाओं, राजनीतिक संस्थाओं और निर्णय लेने वाली व्यवस्थाओं में दिखाई देती है, तो लोकतंत्र अधिक समावेशी बनता है। जिस समाज में सभी वर्ग रहते हैं, उसकी संस्थाओं में भी विभिन्न सामाजिक समूहों की उचित भागीदारी दिखाई देनी चाहिए। इसलिए सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए कि षकिसे कितना आरक्षण मिला?ष बल्कि उससे बड़ा सवाल यह होना चाहिए कि षकिस वर्ग का प्रतिनिधित्व कितना है और वह प्रतिनिधित्व ऐतिहासिक रूप से क्यों कम रहा?

यही प्रश्न आरक्षण की पूरी बहस को एक नई दिशा देता है। किसी गरीब व्यक्ति की आर्थिक समस्या को छात्रवृत्ति, शुल्क में छूट, आवास, स्वास्थ्य सुविधा, रोजगार सहायता, सामाजिक सुरक्षा और अन्य कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से दूर किया जा सकता है। लेकिन यदि किसी सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व लगातार कम है, तो केवल आर्थिक सहायता से उस प्रतिनिधित्व की समस्या हल नहीं होगी। इसी कारण आर्थिक कल्याण और सामाजिक आरक्षण को एक–दूसरे का विकल्प मानना उचित नहीं है। यह भी समझना होगा कि सामाजिक वंचना केवल गरीबी से निर्धारित नहीं होती। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति भी किसी सामाजिक पूर्वाग्रह का सामना कर सकता है, जबकि आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति की समस्या केवल आर्थिक हो सकती है। इसलिए प्रत्येक समस्या का समाधान उसके वास्तविक स्वरूप के अनुसार होना चाहिए। आरक्षण की बहस में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि इसका लाभ समाज के अंतिम और सबसे अधिक वंचित व्यक्ति तक किस प्रकार पहुंचे। यह प्रश्न आरक्षण के विरोध का आधार नहीं, बल्कि व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने का अवसर होना चाहिए। आरक्षण की व्यवस्था की समय–समय पर समीक्षा होनी चाहिए। प्रतिनिधित्व के वास्तविक आंकड़े सामने आने चाहिए। यह देखा जाना चाहिए कि जिन वर्गों के लिए व्यवस्था बनाई गई है, उनकी स्थिति में कितना परिवर्तन आया है और अभी कितनी दूरी तय करनी बाकी है। इस पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता और आंकड़ों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आरक्षण पर बहस केवल राजनीतिक नारों या भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के आधार पर नहीं होनी चाहिए। यह बहस सामाजिक, शैक्षिक और संस्थागत आंकड़ों के आधार पर होनी चाहिए। किस वर्ग की उच्च शिक्षा में कितनी भागीदारी है, सरकारी सेवाओं में उसका प्रतिनिधित्व कितना है, निर्णय लेने वाले पदों पर उसकी उपस्थिति कैसी है और अवसरों तक उसकी पहुंच कितनी हैकृइन प्रश्नों के उत्तर नीति निर्माण का आधार बनने चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी है कि आरक्षण को शिक्षा सुधार का विकल्प न बनाया जाए। यदि सरकारी विद्यालयों की शिक्षा कमजोर रहेगी, ग्रामीण और गरीब विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संसाधन नहीं मिलेंगे, उच्च शिक्षा महंगी रहेगी और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के अवसर असमान रहेंगे, तो केवल आरक्षण सामाजिक न्याय की पूरी मंजिल हासिल नहीं कर सकता। इसलिए आरक्षण के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण सरकारी शिक्षा, छात्रवृत्ति, कौशल विकास, डिजिटल संसाधन, रोजगार के अवसर और सामाजिक सुरक्षा को भी मजबूत करना होगा।

वास्तविक सामाजिक न्याय तभी संभव होगा जब बच्चे के जन्म के साथ उसकी संभावनाओं की सीमा तय न हो। किसी बच्चे का भविष्य उसके परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक पृष्ठभूमि या जन्मस्थान से नहीं, बल्कि उसकी प्रतिभा और मेहनत से अधिक निर्धारित हो। इसके लिए समाज को अवसरों की ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिसमें कमजोर पृष्ठभूमि से आने वाला बच्चा भी आगे बढ़ने के लिए आवश्यक संसाधन प्राप्त कर सके। यहां आरक्षण की भूमिका को सही संदर्भ में समझना जरूरी है। आरक्षण किसी को स्थायी रूप से पीछे रखने की व्यवस्था नहीं, बल्कि ऐतिहासिक रूप से पीछे छूटे वर्गों को संस्थागत भागीदारी में आगे लाने का एक माध्यम है। इसका अंतिम लक्ष्य ऐसा समाज होना चाहिए जहां सामाजिक वंचना इतनी कम हो जाए कि प्रतिनिधित्व स्वाभाविक रूप से संतुलित होने लगे। अर्थात आरक्षण मंजिल नहीं, सामाजिक समानता की यात्रा का एक साधन है। यह यात्रा केवल आरक्षण से पूरी नहीं होगी। इसके लिए सामाजिक सोच में परिवर्तन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आर्थिक अवसर, सामाजिक सुरक्षा, भेदभाव के विरुद्ध प्रभावी व्यवस्था और लोकतांत्रिक संस्थाओं में व्यापक भागीदारीकृइन सभी की आवश्यकता होगी। आरक्षण को लेकर स्वस्थ बहस होनी चाहिए, लेकिन उस बहस का केंद्र समाज को बांटना नहीं, बल्कि समाज को अधिक न्यायपूर्ण बनाना होना चाहिए। आज जरूरत इस बात की है कि आरक्षण को षकिसी को मिलने वाली सुविधा के रूप में देखने के बजाय 'सामाजिक प्रतिनिधित्व के संवैधानिक साधन' के रूप में समझा जाए। गरीबी समाप्त करने के लिए मजबूत आर्थिक नीतियां बनें और सामाजिक असमानता दूर करने के लिए प्रभावी सामाजिक न्याय की नीतियां। दोनों समस्याओं को एक ही तराजू से तौलना उचित नहीं होगा। आखिरकार लोकतंत्र की असली परीक्षा केवल इस बात से नहीं होती कि हर व्यक्ति को वोट देने का अधिकार प्राप्त है। लोकतंत्र की गहराई तब दिखाई देती है जब समाज के अलग–अलग वर्गों की आवाज सत्ता, प्रशासन, शिक्षा और निर्णय लेने वाली संस्थाओं तक पहुंचती है। सामाजिक समानता केवल कानून की किताब में लिखे समान अधिकारों से नहीं आतीय वह तब मजबूत होती है जब समाज के प्रत्येक वर्ग को सम्मान, अवसर और प्रतिनिधित्व का वास्तविक अनुभव होता है। इसलिए आरक्षण पर बहस करते समय प्रश्न को सही दिशा देना होगा। सवाल यह नहीं कि ष्आरक्षण क्यों दिया जा रहा है?ष बल्कि सवाल यह होना चाहिए कि ष्क्या समाज में सभी वर्गों को वास्तव में समान अवसर और उचित प्रतिनिधित्व मिल रहा है?ष सवाल यह नहीं कि षकिसे कितनी सीट मिली?ष बल्कि यह कि षनिर्णय लेने वाली संस्थाओं में समाज के हर वर्ग की आवाज कितनी मौजूद है?ष

और सबसे महत्वपूर्ण बातआरक्षण गरीबी हटाओ योजना नहीं है। गरीबी के लिए आर्थिक न्याय की नीतियां चाहिएय सामाजिक वंचना के लिए सामाजिक न्याय की नीतियां। आरक्षण का मूल उद्देश्य किसी को पीछे करना नहीं, बल्कि लंबे समय से पीछे रह गए वर्गों को आगे आने का अवसर देना है। जब अवसरों की दूरी कम होगी, प्रतिनिधित्व व्यापक होगा और सामाजिक भेदभाव कमजोर पड़ेगा, तभी भारत का लोकतंत्र केवल राजनीतिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी मजबूत होगा। यही आरक्षण की मूल भावना हैकृ समानता केवल कागज पर नहीं, समाज में दिखाई देय भागीदारी केवल अधिकार न रहे, बल्कि संस्थाओं की वास्तविक तस्वीर बने।

22 हजार करोड़ का दावा, 6.5 करोड़ का निपटारा

– डॉ. प्रियंका सौरभ–

राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) द्वारा सुभाष चंद्र बैंक के लगभग 22,006 करोड़ रुपये के दावों के निपटारे को मात्र 6.5 करोड़ रुपये में अस्थायी मंजूरी देने के आदेश ने बैंकिंग क्षेत्र को झकझोर दिया है और दिवालियापन कानून तथा देश के आर्थिक न्याय को लेकर विवाद खड़ा कर दिया है। यह टकराव केवल व्यावसायिक संघर्ष नहीं है, बल्कि बड़े कॉरपोरेट समूहों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, नियामक संस्थानों और न्यायपालिका की व्यवस्था के लिए एक चुनौती है, जो एक ही मंच पर खड़े दिखाई देते हैं। जब इतने बड़े ऋण की वसूली के लिए 99.97 प्रतिशत तक की कटौती की जाती है, तो आप उम्मीद कर सकते हैं कि कानून निष्पक्ष होगा, या कम से कम आर्थिक शक्ति के अनुरूप कानून की व्याख्या अपरिवर्तित रहेगी। इसलिए, इस निर्णय ने जनता की नाराजगी, राजनीतिक बहस और संस्थानों की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

दिवालियापन और दिवालिया संहिता (प्ठब) मूल रूप से संकटग्रस्त कंपनियों को एक निश्चित समय सीमा के भीतर पुनर्जीवित करने, लेनदारों के हितों की रक्षा करने और वित्तीय अनुशासन बनाए रखने के लिए बनाई गई थी। हालांकि, यदि कोई समाधान योजना इतनी कठोर प्रतीत होती है कि अधिकांश दावे को छोड़ दिया जाता है, तो समाधान प्रक्रिया की वास्तविक प्रकृति पर सवाल उठना स्वाभाविक है। किसी कानून की वैधता केवल यह नहीं है कि वह कानूनी रूप से एक प्रक्रिया स्थापित कर सकता है, बल्कि यह उचित और जनहित के अनुरूप भी होना चाहिए। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के धन में भारी कमी – जो अंततः नागरिकों की जमा राशि और करों द्वारा समर्थित है – प्रणाली की जवाबदेही को प्रभावित करेगी। इससे यह धारणा बनती है कि उधारकर्ता का सामाजिक वर्ग, राजनीतिक संबंधा और व्यावसायिक शक्ति वसूली की समय–सारणी और उसकी गंभीरता को प्रभावित कर सकती है।

यह एक संवेदनशील मुद्दा है क्योंकि भारत में बैंकिंग प्रणाली छोटे कर्जदारों के प्रति बेहद कठोर मानी जाती है। किसान, छोटे व्यापारी, निम्न मध्यम वर्ग के वेतनभोगी और शिक्षा ऋण लेने वाले छात्रों को मामूली चूक पर भी अक्सर नोटिस, वसूली की कार्रवाई और दंड का दबाव झेलना पड़ता है। इसके विपरीत, जब बड़े व्यावसायिक ऋणों की बात आती है, तो श्पुनर्गठनश, श्समाधानश और श्कटौतीश जैसे तकनीकी शब्द आम नागरिक को यह नहीं समझा पाते कि नुकसान किसका होगा। ध्22,000 करोड़ की बड़ी रियायत से असमानता पैदा होना तय है, जब एक किसान की जमीन ध्50,000 के बकाया ऋण के कारण खतरे में पड़ जाती है। यह असमानता न केवल आर्थिक है, बल्कि नैतिक भी है, जो राज्य और उसकी संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास को प्रभावित करती है।

इस मुद्दे का एक और पहलू भारत की कॉर्पोरेट ऋण वसूली व्यवस्था की अपारदर्शिता है। दावे की वास्तविक राशि, स्वीकृत प्रतिशत, कटौती के निर्धारण में प्रयुक्त प्रक्रिया और संबंधित परिसंपत्तियों के मूल्यांकन का आधार आम नागरिक के लिए समझना कठिन है। जब दस्तावेज, मूल्यांकन और निर्णय लेने की प्रक्रिया सरल भाषा में उपलब्ध न हों और सार्वजनिक जांच के लिए खुले न हों, तो ऐसे मामलों में संदेह होना स्वाभाविक है। यह संदेह तब और भी प्रबल हो जाता है जब कोई निर्णय ऐसे समय में आता है जब सरकार और बड़े उद्योगपतियों के बीच किसी प्रकार का संबंध है या नहीं, इस पर राजनीतिक बहस चल रही होती है। इसलिए यह केवल एक व्यक्ति या एक कंपनी का मामला नहीं है, बल्कि यह वित्तीय न्याय प्रणाली की विश्वसनीयता का प्रश्न है।

समर्थकों के बीच यह बहस हो सकती है कि दिवालियापन व्यवस्था का लक्ष्य हमेशा अधिकतम वसूली नहीं बल्कि एक व्यावहारिक समाधान होना चाहिए। किसी व्यवसाय का परिसमापन संपत्ति मूल्यों में गिरावट के कारण हो सकता है और मुकदमेबाजी जारी रखने से बैंकिंग प्रणाली को अल्पकालिक लाभ न हो, ऐसे में कम राशि का समझौता भी एक प्रशासनिक समाधान के रूप में देखा जा सकता है। यह तर्क पूरी तरह से निराधार नहीं है। लेकिन ऐसे सभी कारणों की निष्पक्षता, निरंतरता और समान परिस्थितियों में समाधान की प्रयोज्यता के संदर्भ में गहन जांच की जानी चाहिए। यदि महत्वपूर्ण और शक्तिशाली उधारकर्ताओं के साथ बेहतर व्यवहार किया जाता है और छोटे उधारकर्ताओं के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है तो प्रक्रिया की वैधता कमजोर हो जाती है। यहीं पर यह बात महत्वपूर्ण हो जाती है कि कानूनी रूप से वैध और सामाजिक रूप से न्यायसंगत में क्या अंतर है।

इस प्रकरण ने एक महत्वपूर्ण मुद्दे को भी छुआ हैरू क्या भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग संस्कृति वास्तव में सुधार की ओर अग्रसर हुई है या यह अभी भी राजनीतिक और आर्थिक दबावों के प्रति संवेदनशील है? यदि बैंक बड़े जोखिम भरे ऋण देते हैं, तो चूक के कारण होने वाले नुकसान का अंतिम बोझ सरकारी खजाने पर ही पड़ेगा और षनिजी लाभ, सार्वजनिक हानि' का पुराना रूप फिर से दोहराया जाएगा। ऐसी परिस्थितियों में, बैंकिंग सुधार की मांगें सतही प्रतीत होती हैं। चार चरणों में जवाबदेही की आवश्यकता हैरू ऋण स्वीकृति, निगरानी, घ्च्चूक और समाधान। यदि किसी समस्या का अंतिम समय में बड़े पैमाने पर छंटनी करके समाधान किया जाता है, तो पिछली चूकों और प्रणालीगत विफलताओं को छुपाना संभव नहीं है। यह भारतीय लोकतंत्र के लिए एक चेतावनी भी है। चुनाव ही लोकतंत्र का एकमात्र साधन नहीं हैं, और इसकी वैधता इस बात पर टिकी है कि नागरिकों को न्याय के निष्पक्ष कार्यान्वयन पर भरोसा हो। लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास तब कम हो जाता है जब आम नागरिकों को लगता है कि कानून शक्तिशाली लोगों का पक्ष लेते हैं और कमजोरों को दंडित करते हैं।

एआई युग में नौकरी मिलने–खोने के प्रश्न

–डा. शशांक द्विवेदी–

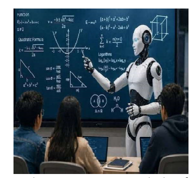

वैश्विक वित्तीय संस्था नोमुरा की रिपोर्ट के अनुसार, 2022 से अगस्त, 2026 के बीच भारत में एआई से संबंधित करीब 83,100 नौकरियां पैदा हुईं, जबकि एआई से जुड़ी 31,921 नौकरियां प्रभावित हुईं। मगर यह निष्कर्ष निकालना खतरनाक होगा कि एआई सिर्फ रोजगार बढ़ा रहा है। एआई को लेकर में सबसे बड़ा डर यही रहा है कि मशीनें इंसानों की नौकरियां छीन लेंगी। चौटबॉट से लेकर जनरेटिव एआई तक, तकनीक जिस तेजी से विकसित हुई है, उसने इस आशंका को और गहरा किया है।

वैश्विक वित्तीय संस्था नोमुरा की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 2022 से अगस्त, 2026 के बीच भारत में एआई से संबंधित करीब 83,100 नौकरियां पैदा हुईं, जबकि एआई से जुड़ी 31,921 नौकरियां छंटनी या कर्मचारियों की कमी के रूप में प्रभावित हुईं। अर्थात, हर एक प्रभावित नौकरी के मुकाबले लगभग 2.6 नई एआई–संबंधित नौकरियां बनीं। मगर यह निष्कर्ष निकालना खतरनाक होगा कि एआई रोजगार की समस्या समाप्त कर रहा है। एआई नई नौकरियां जरूर बना रहा है, लेकिन जरूरी नहीं कि जिन लोगों की पुरानी नौकरियां जा रही हैं, वही लोग नई नौकरियों में प्रवेश कर पा रहे हों। यही भारत के सामने उभरती सबसे बड़ी रोजगार चुनौती है। नोमुरा के अनुसार, भारत में एआई अपनाने से एक 'दो–स्तरीय रोजगार बाजार' उभर रहा है। एक तरफ अनुभवी कर्मचारियों की मांग बनी हुई है, वहीं दूसरी तरफ फ्रेशर्स के लिए अवसर अपेक्षाकृत कम हो रहे हैं। भारतीय आईटी क्षेत्र की 651 कंपनियों पर किए गए आईसीआरआईईआर के सर्वेक्षण में 55 प्रतिशत कंपनियों ने बताया कि उनकी एंट्री–लेवल भर्ती में कमी आई है। इसके मुकाबले मिड–लेवल भर्ती में कमी बताने वाली कंपनियों का अनुपात 25 प्रतिशत और वरिष्ठ स्तर पर केवल 14 प्रतिशत था।

भारत की आर्थिक ताकत का एक बड़ा आधार हर वर्ष कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से निकलने वाली विशाल युवा आबादी है। यदि कंपनियां पहले की तरह बड़ी संख्या में फ्रेशर्स को नियुक्त नहीं करतीं तो समस्या केवल बेरोजगारी की नहीं होगी, बल्कि 'करिअर की पहली सीढ़ी' के कमजोर पड़ने की होगी। दरअसल, पारंपरिक कॉर्पोरेट व्यवस्था में एक युवा कर्मचारी सामान्य काम से शुरुआत करता था। वह डेटा तैयार करता था, रिपोर्ट बनाता था, बेसिक कोड लिखता था, गुणवत्ता जांच करता था, ग्राहक सेवा संभालता था और धीरे–धीरे अनुभव हासिल करके जिम्मेदार पदों तक पहुंचता था। एआई इन शुरुआती कार्यों का एक बड़ा हिस्सा तेजी से करने लगा है।

नोमुरा ने स्टाफिंग फर्म स्फेनो के आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि भारतीय आईटी कंपनियों की नेट हायरिंग वित्त वर्ष 2021–22 में लगभग छह लाख थी, जो वित्त वर्ष 2025–26 में घटकर करीब 1.40 लाख रह गई। कंपनियां बड़े पैमाने पर कैंपस भर्ती करने के बजाय कम, लेकिन कुशल कर्मियों को प्राथमिकता दे रही हैं। यहां एआई को अकेला दोषी मानना भी उचित नहीं होगा। वैश्विक मांग, आईटी उद्योग का पुनर्गठन, लागत नियंत्रण और ऑटोमेशन जैसे कई कारक इस बदलाव के पीछे हैं। लेकिन एआई ने इस परिवर्तन की गति निश्चित रूप से बढ़ा दी है।

लेकिन अगर एआई नई नौकरियां बना रहा है तो वे नौकरियां किसके लिए हैं? एआई मॉडल विकसित करने वाले इंजीनियर, डेटा विशेषज्ञ, मशीन लर्निंग विशेषज्ञ, एआई ट्रेनर, डेटा एनोटेटर, भाषा विशेषज्ञ, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ और एआई सिस्टम को व्यवसाय से जोड़ने वाले पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। नोमुरा के एशियाई अध्ययन में एआई से संबंधित नई नौकरियों का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा टेक्नोलॉजी क्षेत्र में केंद्रित था।

युवक को मारकर खा गया तेंदुआ, झाड़ियों में अधखाया शव मिला, गांव में मचा कोहराम

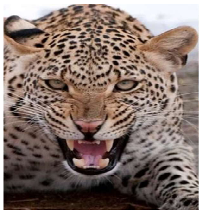

संवाददाता–बहराइच। कतर्नियाघाट क्षेत्र में मंगलवार तड़के तेंदुए ने बरामदे में सो रहे 30 वर्षीय राम सिंह गौतम को दबोच लिया। करीब 100 मीटर दूर झाड़ियों में उसका अधखाया शव मिला। घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने वन विभाग के खिलाफ नारेबाजी की और डीएफओ के आने तक शव सौंपने से इनकार किया।

बहराइच के कतर्नियाघाट वन्यजीव प्रभाग के ककरहा रेंज में जंगल से सटे महबूब नगर गांव में मंगलवार तड़के तेंदुए ने हमला कर 30 वर्षीय युवक की जान ले ली। बरामदे में सो रहे युवक को तेंदुआ जबड़े में दबोचकर घर से करीब सौ मीटर दूर झाड़ियों में उठा ले गया। सुबह उसका अधखाया और क्षत–विक्षत शव मिलने से गांव में हड़कंप मच गया। घटना से नाराज ग्रामीणों ने वन विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और डीएफओ के आने तक शव पुलिस को सौंपने से इनकार कर दिया।

मोतीपुर थाना क्षेत्र के महबूव नगर गांव निवासी राम सिंह गौतम (30) पुत्र मालती प्रसाद सोमवार रात घर के बरामदे में सो रहा था। उस समय वह घर में अकेला था। उसका बड़ा भाई पेशकार गौतम जंगल पार चुरूवा गांव स्थित खेत में फसल की रखवाली कर रहे पिता मालती प्रसाद को खाना देने गया था। रात करीब तीन बजे पेशकार घर लौटा तो राम सिंह बिस्तर पर नहीं मिला। उसने आसपास तलाश की और शोर मचाया। आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण भी मौके पर पहुंच गए।

मंगलवार भोर करीब चार बजे ग्रामीणों ने घर से लगभग सौ मीटर दूर झाड़ियों में राम सिंह का अधखाया और क्षत–विक्षत शव देखा। शव मिलने की जानकारी होते ही परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर मोतीपुर थाना प्रभारी ब्रह्मा गोंड पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। वन विभाग की ओर से फारेस्ट गार्ड कपिल सिंह भी घटनास्थल पर पहुंचे और वन्यजीव के हमले की जानकारी रेंज कार्यालय को दी। तेंदुए के हमले में युवक की मौत की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण घटनास्थल पर एकत्र हो गए। ग्रामीणों में वन विभाग के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश दिखाई दिया। उनका आरोप है कि जंगल से सटे गांवों में वन्यजीवों की आवाजाही के बावजूद सुरक्षा को लेकर पर्याप्त इंतजाम नहीं किए जा रहे हैं। नाराज ग्रामीणों ने वन विभाग के खिलाफ नारेबाजी की। ग्रामीणों ने कहा कि जब तक डीएफओ मौके पर नहीं पहुंचते, तब तक शव को पोस्टमार्टम के लिए पुलिस को नहीं सौंपा जाएगा। वन विभाग की टीम तेंदुए की मौजूदगी और घटना के कारणों की जांच में जुट गई है। गांव में घटना के बाद दहशत का माहौल है।

नेपाल से बहकर आए चार शव नेपाल पुलिस को सौंपे गए

संवाददाता–महराजगंज। नेपाल में आई भीषण जल प्रलय के बाद नारायणी नदी में बहकर कुशीनगर जनपद के खड्डा थाना क्षेत्र में पहुंचे चार शवों को मंगलवार को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद नेपाल पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया। बरामद शवों में तीन महिलाओं एवं एक पुरुष का शव शामिल थे। कुशीनगर जिले के नारायणी नदी के ठोकर नंबर–3 स्थित मदनपुर सुकरौली क्षेत्र में नेपाल की ओर से बहकर आए इन चार शवों की बरामदगी के बाद स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कीं। इसके बाद मंगलवार को निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत सभी शव नेपाल पुलिस को सौंप दिए गए, ताकि वहां नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जा सके।

शवों की सुपुर्दगी के दौरान भारत एवं नेपाल के अधिकारियों की मौजूदगी रही। नेपाल पुलिस की ओर से महेशपुर प्रहरी के इंस्पेक्टर सुबराज बोम मौजूद रहे। वहीं कुशीनगर के अतिरिक्त मजिस्ट्रेट/एसडीएम विवेक शील, एसआई केशनाथ यादव, खड्डा थाना के एसएसआई गंगाराम यादव, एसएसबी के असिस्टेंट कमांडेंट हेमंत कुमार एवं ठूठीबारी थानाध्यक्ष अमित सिंह मौके पर मौजूद रहे। अधिकारियों के अनुसार नेपाल में आई प्राकृतिक आपदा के बाद नारायणी नदी के तेज बहाव में कई लोगों के बहने की आशंका है। ऐसे में सीमावर्ती क्षेत्र में नदी के बहाव के साथ आ रहे शवों की पहचान और सुपुर्दगी की प्रक्रिया को पूरी सतर्कता के साथ पूरा किया जा रहा है। चारों शवों को नेपाल पुलिस अपने साथ ले गई है, जहां आगे की फॉरेंसिक कार्रवाई की जाएगी।

स्कूल नहीं तो वोट नहीं... के नारे से गूंजा कोदइला

संवाददाता–महराजगंज। कम छात्र संख्या वाले परिषदीय विद्यालयों के विलय को लेकर सदर ब्लाक के कोदइला में ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर स्कूल नहीं तो वोट नहीं... का नारा बुलंद किया। ग्रामीणों का कहना रहा कि कोदइला प्राथमिक विद्यालय का विलय कंपोजिट विद्यालय भिस्वा में किए जाने के बाद छोटे बच्चों को करीब 1300 मीटर की दूरी तय करने के साथ एनएच 730 पार कर स्कूल जाना पड़ रहा है। रास्ते में बड़ा पोखरा भी पड़ता है। ऐसे में अभिभावक बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। ग्रामीणों का कहना है कि कोदइला प्राथमिक विद्यालय से भिस्वा स्थित विद्यालय की दूरी करीब 1.3 किलोमीटर है।

उनका सवाल है कि जब सरकार ने एक किलोमीटर से अधिक दूरी और रास्ते में भौगोलिक बाधाओं वाले विद्यालयों की पेयरिंग की समीक्षा और विलय वापस लेने के निर्देश दिए थे, तो कोदइला प्राथमिक विद्यालय को राहत क्यों नहीं मिली? ग्रामीणों के मुताबिक सड़क पर तेज रफ्तार वाहनों की आवाजाही के कारण अभिभावक छोटे बच्चों को अकेले दूसरे विद्यालय भेजने से डरते हैं। इसका असर बच्चों की स्कूल उपस्थिति पर भी पड़ रहा है। ग्रामीणों का यह भी कहना है कि कई अभिभावक सुरक्षा की चिंता के कारण बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजने से कतरा रहे हैं।प्रदर्शन में शामिल पुनीता, तैमुनिशा, ललिता, बेला, मुस्ताक, केदार, आबिद, नसीरून समेत अन्य ग्रामीणों ने कहा कि उनकी मांग सिर्फ इतनी है कि गांव के छोटे बच्चों को सुरक्षित वातावरण में पढ़ने का अवसर मिले। कहा कि यदि विद्यालय का विलय वापस नहीं किया गया तो उनका विरोध जारी रहेगा। प्रदर्शन के दौरान हाथों में बैनर लेकर ग्रामीणों ने स्कूल नहीं तो वोट नहीं... का नारा लगाया। कहा कि इस मामले में डीएम व बीएसए से मिलकर विलय निरस्त करने की मांग की जाएगी।

सत्य–धर्म की कमाई से ही जीवन का कल्याण होग

सत्य–धर्म की राह पर अर्जित धन ही बनेगा जीवन का आधार –महामंडलेश्वर डॉ गणेश दास

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। "जगत में जीवन है दिन चार, सुमिरन कर ले, भजन तू कर ले..." रामनगरी में श्रीराम कथा की भक्ति धारा के बीच जीवन के मर्म और कर्म की शुचिता का संदेश गूंजा। श्री अवध बिहारी कुंज के पीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 महामंडलेश्वर डॉ. गणेशदासजी महाराज ने कहा कि जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए मनुष्य को सांसारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ सत्य, धर्म और निष्ठा को जीवन का आधार बनाना चाहिए। धन कमाना अनुचित नहीं है, लेकिन उसकी कमाई का मार्ग सत्य और धर्मसम्मत होना आवश्यक है। सत्य–निष्ठा से अर्जित धन ही मनुष्य के जीवन को उन्नति और अंततः कल्याण की दिशा देता है।श्री अवध बिहारी कुंज में श्रीमद्गुरु अग्रपीठाधीश्वर रैवासा धाम के साकेतवासी स्वामी डॉ. राघवाचार्य वेदांतीजी महाराज के द्वितीय साकेतोत्सव के अवसर पर चल रहे नौ दिवसीय श्री सियपिय मिलन महोत्सव एवं श्रीराम कथा का आयोजन श्रीमहामंडलेश्वर हरिकृष्णदास ग्वालिया बाबा के सानिध्य में चल रहा है। कथा का विस्तार से वर्णन करते हुए गणेश दासज महाराज कि श्रीरामचरितमानस केवल कथा श्रवण का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को मर्यादा और आदर्श से जोड़ने वाला ग्रंथ है। प्रभु श्रीराम ने संपूर्ण जीवन सत्य, धर्म और निष्ठा के लिए समर्पित किया। माता–पिता की आज्ञा का पालन, भाइयों के प्रति प्रेम, गो–ब्राह्मण एवं विद्यार्थियों की रक्षा और धर्म की स्थापना उनके जीवन के प्रमुख आदर्श रहे। श्रीराम कथा का वास्तविक फल तभी है, जब कथा में सुने प्रभु के चरित्र को मनुष्य अपने आचरण में उतारे। उन्होंने कहा कि सत्य और निष्ठा के साथ अर्जित धन का उपयोग जीवनयापन के साथ परमार्थ में होना चाहिए। इससे व्यक्ति का जीवन भी सार्थक होता है और समाज का भी कल्याण होता है। भक्ति मनुष्य को भीतर से निर्मल करती है और उसके कर्मों को लोकमंगल की दिशा प्रदान करती है।कथा विश्राम के बाद आरती उतारी गई। संतों एवं श्रद्धालुओं को सम्मानपूर्वक प्रसाद ग्रहण कराया गया। प्रतिदिन बड़ी संख्या में संत–भक्त आयोजन में सम्मिलित होकर कथा श्रवण कर रहे हैं। आठ सितंबर को संत सम्मेलन के साथ नौ दिवसीय आयोजन का समापन होगा।

इनवर्टर की बैटरी साफ करते समय करंट की चपेट में आने से आचार्य की मौत

संवाददाता–देवरिया। घर में इनवर्टर की बैटरी की साफ–सफाई करते समय करंट की चपेट में आने से आचार्य गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजन उन्हें इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज देवरिया ले गए, जहां उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। तरकुलवा थाना क्षेत्र के तवकलपुर गांव निवासी उत्कर्ष तिवारी (24) पुत्र घनश्याम तिवारी गोरखपुर स्थित एक विष्णु मंदिर में आचार्य का कार्य करते थे। परिजनों के अनुसार, वह दो दिन पहले रक्षाबंधन के अवसर पर अपने गांव स्थित घर आए थे। मंगलवार को वह घर में लगे इनवर्टर की बैटरी की साफ–सफाई कर रहे थे।

इसी दौरान अचानक करंट की चपेट में आने से वह गंभीर रूप से झुलस गए। घटना के बाद परिजन आनन–फानन में उन्हें मेडिकल कॉलेज देवरिया लेकर पहुंचे, जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। उनकी मौत की खबर मिलने के बाद मां सरोज देवी और छोटे भाई गगन तिवारी का रो–रोकर बुरा हाल है। गांव में भी शोक की लहर है। थाना प्रभारी भूपेंद्र सिंह ने बताया कि युवक की करंट लगने से मौत की जानकारी मिली है। परिजन पोस्टमार्टम कराने के लिए तैयार नहीं हैं। यदि तहरीर मिलती है तो पुलिस आवश्यक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम कराएगी।

बंद कमरे में बिस्तर पर मिले पति–पत्नी के शव

संवाददाता–बलरामपुर। उतरौला थाना क्षेत्र के पीरगैंड़ास गांव में सोमवार को एक दंपती अपने कमरे में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत मिले। दोनों के शव अंदर से बंद कमरे में बिस्तर पर पड़े मिले। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। क्षेत्राधिकारी, थाना प्रभारी, एएसपी और फील्ड यूनिट की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने दोनों शवों का पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतकों की पहचान मनोज कुमार (28) और उनकी पत्नी मंजू (26) के रूप में हुई है। दंपती के दो छोटे बच्चे हैं। अचानक माता–पिता की मौत से बच्चों और परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। परिजनों के अनुसार, पति–पत्नी अपने कमरे में थे और दरवाजा अंदर से बंद था। परिवार के लोगों ने काफी देर तक दरवाजा खटखटाया, लेकिन अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। अनहोनी की आशंका होने पर परिजनों ने दरवाजा तोड़ दिया। कमरा खुलने के बाद दोनों बिस्तर पर अचेत अवस्था में पड़े मिले। इसके बाद परिजन आनन–फानन में दोनों को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उतरौला पहुंचे। वहां डॉक्टरों ने जांच के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया। परिवार के मुताबिक, मनोज कुमार बाहर रहकर नौकरी करते थे और जुलाई में ही घर लौटे थे। घटना से पहले दोनों पति–पत्नी कमरे में साथ थे। मौत की वजह को लेकर फिलहाल परिवार के लोग भी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दे पा रहे हैं। अपर पुलिस अधीक्षक बलरामपुर विशाल पांडे ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उतरौला से पुलिस को सूचना मिली थी कि पीरगैंड़ास गांव से दो लोगों को उनके परिजन अस्पताल लेकर आए हैं, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया है। सूचना मिलते ही क्षेत्राधिकारी और थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे। इसके बाद एएसपी समेत पुलिस अधिकारियों और फील्ड यूनिट ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, हालांकि अभी घटना के पीछे की वजह स्पष्ट नहीं हुई है। घटना के बाद सुसाइड वीडियो की चर्चा को लेकर भी सवाल उठे। इस संबंध में एएसपी विशाल पांडे ने स्पष्ट किया कि अभी तक कोई सुसाइड वीडियो सामने नहीं आया है। पुलिस किसी भी संभावना को नजरअंदाज नहीं कर रही है और सभी पहलुओं की जांच की जा रही है। पुलिस ने घटना की तह तक पहुंचने के लिए एक विशेष टीम गठित की है। टीम दंपती के मोबाइल फोन का तकनीकी विश्लेषण करेगी। इसके साथ ही परिजनों से भी गहन पूछताछ की जा रही है, ताकि घटना से पहले की परिस्थितियों और संभावित कारणों की जानकारी मिल सके। पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि घटना से पहले दंपती की किसी से बातचीत हुई थी या नहीं और उनके मोबाइल फोन में ऐसी कोई जानकारी मौजूद है या नहीं, जो मौत की वजह तक पहुंचने में मदद कर सके। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस के कई अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। फील्ड यूनिट ने भी मौके से जरूरी साक्ष्य जुटाने का प्रयास किया। पुलिस ने कमरे और आसपास की स्थिति का बारीकी से निरीक्षण किया।

शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और तकनीकी जांच के बाद मौत की परिस्थितियों को लेकर स्थिति अधिक स्पष्ट हो सकेगी। मनोज और मंजू की मौत ने परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है। दोनों के दो छोटे बच्चे हैं, जो अब माता–पिता के बिना रह गए हैं। घर में जहां सामान्य दिनों की तरह परिवार चल रहा था, वहीं अचानक हुई इस घटना के बाद मातम पसरा हुआ है। एएसपी विशाल पांडे ने कहा कि पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच कर रही है। अभी तक मौत के पीछे का कारण स्पष्ट नहीं है और परिजन भी कोई ठोस जानकारी नहीं दे पा रहे हैं।

तैयारी ऐसी होनी चाहिए कि नौकरी आपकी करे तलाश -एसपी

संवाददाता–महराजगंज। डीएम की देखरेख में जिले के शिक्षण संस्थानों में आयोजित किए जा रहे युवा संवाद के तहत मंगलवार को जीएसवीएस इंटर कालेज महराजगंज में युवा संवाद का आयोजन हुआ। एसपी शक्ति मोहन अवस्थी ने छात्र–छात्राओं से संवाद कर उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरित किया। बेहतर कॅरियर का टिप्स देते हुए कहा कि तैयारी ऐसी होनी चाहिए कि नौकरी आपकी तलाश करे। एसपी ने यूपीएससी सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में महत्वपूर्ण टिप्स दिए। इसके लिए केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने की मानसिकता से बाहर निकलकर स्वयं को ज्ञान, कौशल और व्यक्तित्व के स्तर पर सक्षम बनाना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में विषय चयन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यार्थियों को दूसरों की देखा–देखी या किसी के दबाव में विषय का चयन नहीं करना चाहिए, बल्कि अपनी रुचि, क्षमता और समझ के अनुरूप विषय चुनना चाहिए। सही विषय चयन सफलता की दिशा में पहला मजबूत कदम होता है। कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास, एकाग्रता, लगनशीलता और निरंतर परिश्रम आवश्यक है। लक्ष्य निर्धारित करने के बाद उसे प्राप्त करने तक निरंतर प्रयास करते रहने का साहस अपने भीतर विकसित करना चाहिए।उन्होंने विद्यार्थियों को समय का सदुपयोग करने, नियमित अध्ययन करने, सकारात्मक सोच बनाए रखने के साथ अपने लक्ष्य के प्रति पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। संवाद के दौरान विद्यार्थियों ने भी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और कॅरियर से संबंधित विषयों पर अपनी जिज्ञासाएं रखीं, जिसका एसपी ने समाधान किया। कहा कि उन्होंने खुद ही राजनीति विज्ञान विषय को पसंद किया था। अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य धनंजय सिंह ने की, जबकि संचालन अमरेंद्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर राजेश कुमार, अखंड दुबे, संत राज यादव, अभिषेक पांडेय, डॉ. नवीन श्रीवास्तव, मनीष कनौजिया सहित विद्यालय के शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डीएम ने मां पाटेश्वरी विश्वविद्यालय परिसर का निरीक्षण किया

संवाददाता–बलरामपुर। मां पाटेश्वरी राज्य विश्वविद्यालय के उद्घाटन की तैयारियों में प्रशासन जुट गया है। डीएम डॉ. विपिन कुमार जैन ने मंगलवार दोपहर 3 बजे बन रहे विश्वविद्यालय परिसर का दौरा किया। उन्होंने निर्माण कार्यों की प्रगति और उद्घाटन से पहले की जा रही तैयारियों का जायजा लिया। डीएम ने अधिकारियों और काम करने वाली संस्था को साफ निर्देश दिए कि निर्माण, फिनिशिंग, फर्नीचर और साइनेज समेत कोई भी काम बाकी नहीं रहना चाहिए। जिलाधिकारी ने विश्वविद्यालय परिसर में एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, एकेडमिक ब्लॉक, लड़कों के हॉस्टल और लड़कियों के हॉस्टल का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। उन्होंने भवनों में चल रहे निर्माण और फिनिशिंग के काम देखे। साथ ही बचे हुए कामों को अच्छी क्वालिटी के साथ तेजी से पूरा करने को कहा।

कक्षाएं शुरू करने की तैयारियों पर भी खास जोर दिया गया। एकेडमिक ब्लॉक के निरीक्षण के दौरान डीएम ने क्लासरूम और दूसरे कमरों को देखा। उन्होंने कक्षाओं को ठीक से चलाने के लिए जरूरी फर्नीचर और दूसरी व्यवस्थाएं समय पर पूरी कराने को कहा।

इसके अलावा, विद्यार्थियों, शिक्षकों और आने वाले लोगों को परिसर में कोई दिक्कत न हो, इसके लिए भवनों, ऑफिसों, विभागों और खास जगहों की पहचान आसान बनाने के लिए ठीक से साइनेज लगाने के निर्देश दिए। डीएम ने कहा कि विश्वविद्यालय सिर्फ इमारतों का समूह नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के भविष्य को बनाने वाला एक जरूरी संस्थान है। इसलिए परिसर में सुविधा, क्वालिटी और अच्छी व्यवस्था से जुड़े हर काम पर गंभीरता से ध्यान दिया जाए। भवनों की फिनिशिंग के साथ परिसर को सुंदर और व्यवस्थित रूप देने से जुड़े सभी बचे हुए कामों को सबसे पहले पूरा किया जाए।

डीएम ने बताया कि मां पाटेश्वरी विश्वविद्यालय का उद्घाटन जल्द होने वाला है। ऐसे में सभी संबंधित विभाग और काम करने वाली संस्थाएं मिलकर काम करें और तय समय में तैयारियां पूरी करें। उन्होंने साफ कहा कि उद्घाटन से पहले निर्माण, फिनिशिंग, फर्नीचर, साइनेज और दूसरी जरूरी व्यवस्थाओं का कोई भी काम अधूरा नहीं रहना चाहिए।

निरीक्षण के दौरान लोक निर्माण विभाग के इंजीनियर, काम करने वाली संस्था के अधिकारी और दूसरे संबंधित अधिकारी–कर्मचारी मौजूद थे।

शेयर बाजार में निवेश नाम पर 12.44 लाख की ठगी, साइबर थाना ने वापस कराए

संवाददाता–गोण्डा। साइबर पुलिस ने शेयर बाजार में निवेश के नाम पर हुई ठगी के मामले में आज मंगलवार देर शाम 5रू00 बजे बड़ी कार्रवाई कर दो 12 लाख 44 हजार 770 रुपए वापस कराए हैं। मालवीय नगर के रहने वाले राजेंद्र कुमार के साथ यह ठगी हुई थी। पुलिस ने मंगलवार शाम करीब 5 बजे पीड़ित को सीओ सदर कार्यालय बुलाकर पैसे वापस मिलने की जानकारी दी। इसके बाद पीड़ित ने गोंडा पुलिस का धन्यवाद किया। दरअसल, 24 जून को राजेंद्र कुमार के मोबाइल पर आईपीओ और शेयर मार्केट में ज्यादा मुनाफे से जुड़ा एक विज्ञापन आया था। उस लिंक पर क्लिक करते ही वह एक अनजान व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ गए। इस ग्रुप में पहले से मौजूद लोग फर्जी मुनाफे के स्क्रीनशॉट और दावे साझा कर रहे थे। जालसाजों की बातों में आकर राजेंद्र कुमार ने बड़े मुनाफे के लालच में कई बार में लाखों रुपए लगा दिए। जब उन्होंने पैसे निकालने की कोशिश की, तब उन्हें ठगी का पता चला। पीड़ित ने इसके बाद इस मामले की शिकायत गोंडा के पुलिस अधीक्षक से की थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए साइबर क्राइम थाना गोंडा में केस दर्ज किया गया।

साइबर टीम ने तेजी से तकनीकी जांच की। टीम ने जालसाजों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे कई बैंक खातों की पहचान कर उन्हें तुरंत फ्रीज करा दिया। कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद फ्रीज किए गए कुल 12 लाख 44 हजार 770 रुपए पीड़ित के खाते में वापस करा दिए गए। अपनी मेहनत की कमाई वापस मिलने पर पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक और साइबर टीम का आभार जताया।

स्कूल गेट पर रात में पहुंचा विशाल मगरमच्छ

संवाददाता–महराजगंज। ठूठीबारी कस्बे में सोमवार की रात उस समय अफरा–तफरी मच गई, जब चंदन नदी बांध से सटे आदर्श बाल विद्या मंदिर हाई स्कूल के मुख्य मार्ग पर एक विशालकाय मगरमच्छ दिखाई दिया।

रात को टहलने निकले ग्रामीणों की नजर मगरमच्छ पर पड़ते ही उन्होंने शोर मचाना शुरू कर दिया। शोर–शराबा और लोगों की आवाजाही बढ़ने पर मगरमच्छ पानी की ओर चला गया। मंगलवार को इसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल होने लगा। विद्यालय के बगल में एक पोखरी है। आशंका जताई जा रही है कि पोखरी से ही मगरमच्छ निकला होगा। यह इलाका ठूठीबारी बस स्टैंड के समीप होने के कारण शाम के बाद भी काफी व्यस्त रहता है। यहां से निचलौल, महराजगंज, नौतनवां समेत विभिन्न स्थानों के लिए यात्रियों की आवाजाही और छोटी–बड़ी बसों का संचालन होता है। ऐसे में मुख्य मार्ग के पास विशाल मगरमच्छ के पहुंचने से लोगों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। लोगों ने वन विभाग और प्रशासन से क्षेत्र में निगरानी बढ़ाने तथा मगरमच्छ को सुरक्षित तरीके से पकड़कर आबादी से दूर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने की मांग की है।

संत सेवा और गौ सेवा के प्रति समर्पित थे महंत रामकृपाल दास

नवीं पुण्यतिथि पर संतों–महंतों ने दी श्रद्धांजलि, व्यक्तित्व एवं कृतित्व को किया याद

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। रामनगरी की संत परंपरा में सेवा और साधना के पर्याय रहे श्री चरण पादुका मंदिर के पूर्वाचार्य महंत रामकृपाल दास महाराज की नवीं पुण्यतिथि पर मंगलवार को मंदिर परिसर में श्रद्धांजलि सभा हुई। महाराज के शिष्य एवं हनुमानजी के पुजारी जटाशंकर दास महाराज के संयोजन में आयोजित सभा में अयोध्या और हनुमानगढ़ी के सैकड़ों संत–महंतों ने पहुंचकर अपने गुरु को श्रद्धासुमन अर्पित किए।श्रद्धांजलि सभा में संतों–महंतों ने महंत रामकृपाल दास महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व को स्मरण करते हुए कहा कि उनका संपूर्ण जीवन भजन–साधना के साथ संत सेवा और गौ सेवा को समर्पित रहा। उन्होंने सेवा को केवल आश्रम की व्यवस्था नहीं, बल्कि संत जीवन का मूल धर्म माना और इसी भावना को अपने शिष्यों में भी संस्कारित किया।वक्ताओं ने कहा कि महंत रामकृपाल दास महाराज के बताए मार्ग पर आश्रम में आज भी गौ सेवा, संत सेवा और विद्यार्थी सेवा निरंतर चल रही है। उनके शिष्य गुरु की सेवा परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आश्रम को निरंतर नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहे हैं। गुरु के आदर्शों को जीवंत रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।कार्यक्रम में पहुंचे अतिथियों और संत–महंतों का स्वागत संयोजक जटाशंकर दास महाराज ने किया। उन्होंने गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सेवा कार्यों को निरंतर जारी रखने का संकल्प दोहराया।इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री माधव दास, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के प्रवक्ता महंत संजय दास, गद्दीनशीन महंत प्रेम दास महाराज के शिष्य प्रधानाचार्य महंत डॉ. महेश दास सहित बड़ी संख्या में संत–महंत उपस्थित रहे। सभी ने महंत रामकृपाल दास महाराज को नमन कर उनके आदर्शों को स्मरण किया।

महिला आयोग उपाध्यक्ष ने एमसीएच विंग का निरीक्षण किया

संवाददाता–बहराइच। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष चारु चौधरी ने मंगलवार दोपहर महर्षि बालार्क चिकित्सालय के एमसीएच विंग का निरीक्षण किया। वह जनपद के एक दिवसीय दौरे पर थीं। उन्होंने अस्पताल में महिलाओं और गर्भवती महिलाओं को दी जा रही इलाज की सेवाओं, सुविधाओं और साफ–सफाई व्यवस्था को देखा। इस दौरान उन्होंने अलग–अलग वार्डों में व्यवस्थाएं जांचीं और मरीजों से सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। उपाध्यक्ष ने अल्ट्रासाउंड कक्ष, टीकाकरण कक्ष, ऑपरेशन थियेटर (ओटी), ओपीडी, आईसीयू, पीएनसी, एफएनएयू, केएमसी समेत कई वार्डों का निरीक्षण किया। उन्होंने पैथालॉजी और ब्लड बैंक की व्यवस्थाएं भी देखीं। इस दौरान उन्होंने डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ, मरीजों और उनके परिजनों से बात की। उन्होंने इलाज, दवाओं, जांच और अन्य सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। चौधरी ने मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एसके वर्मा और मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. डॉ. संजय खत्री को निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अस्पताल में आने वाली महिलाओं को शासन से मिलने वाली सभी सुविधाएं प्राथमिकता के आधार पर दी जाएं।

इंजीनियर बेटे, वकील पिता की एकसाथ उठेगी अर्थी

संवाददाता–महराजगंज। मंगलवार सुबह जब सवरेजी और जयप्रकाशनगर में इस भयानक त्रासदी की खबर पहुंची तो पूरे इलाके में मातम पसर गया। कई घरों में चूल्हे तक नहीं जले। दोनों के परिजन स्तब्ध हैं। पूरा मामला जिला मुख्यालय से 5 किमी दूर सदर कोतवाली क्षेत्र के सवरेजी गांव और उसके पास जयप्रकाश नगर वार्ड का है। सवरेजी में पिता–पुत्र की अर्थी सजा दी गई है। जबकि जयप्रकाश नगर वार्ड में भी मातम पसरा है। सवरेजी गांव के रहने वाले रितेश पांडेय (50) सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता थे। उनकी पत्नी विद्यावती की 2002 में हार्ट अटैक से मौत हो गई थी। उनका बड़ा बेटा अभिसार पांडेय (30) अमेरिका में इंजीनियर के पद पर तैनात था। जबकि छोटा बेटा आयुष है। जो दिल्ली से इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहा है। 16 अगस्त को अभिसार अमेरिका से दिल्ली लौटे थे। इसके बाद दोनों रक्षा बंधन पर अपने गांव सवरेजी आए थे। बुजुर्गों और परिजनों से मुलाकात के बाद वे दिल्ली लौट रहे थे। तभी हादसा हो गया। रितेश के वृद्ध और पैरालाइसिस से पीड़ित पिता जितेंद्र पांडेय घर पर हैं। उनके सामने अब बेटे और पोते का शव पहुंचेगा। परिवार में अब छोटा बेटा आयुष ही रह गया है।

हादसे में जयप्रकाशनगर के रहने वाले विकास कश्यप (30) की भी जान गई है। वो दिल्ली में प्राइवेट कंपनी में इंजीनियर थे। वो भी उसी कार में सवार थे। रितेश की शादी करीब 5 साल पहले मोहिनी के साथ हुई थी। उनके दो छोटे बच्चे हैं, जिन्हें शायद अभी यह भी पता नहीं कि उनके पिता अब कभी वापस नहीं लौटेंगे। विकास के पिता सत्यप्रकाश लंबे समय से बीमार चल रहे हैं। हादसे की खबर मिलने के बाद से विकास की पत्नी मोहिनी सुध–बुध खो बैठी हैं, जबकि बहनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

सीएम योगी पर अजय राय ने दाखिल किया मानहानि का केस

संवाददाता–अयोध्या। मछली भोज विवाद में नया मोड़ आ गया है। मंगलवार को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय इस मामले में सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ मानहानि का केस करने लखनऊ सिविल कोर्ट पहुंचे। उन्होंने खुद पर अयोध्या में मछली खाने के झूठे आरोप लगाए जाने का आरोप लगाया और अदालत में अपनी याचिका दाखिल करने की प्रक्रिया की। इसके पहले अजय राय ने इस मामले को लेकर सीएम योगी को खुला पत्र लिखा था। अजय राय कहना है कि अयोध्या दर्शन के दौरान उन पर मछली की दावत उड़ाने और माफिया के सामने थर–थर कांपने का आरोप लगाया गया। जबकि यह अमिट सत्य है कि वह शाकाहारी हैं। जिस कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति का उल्लेख किया गया वह निषाद समाज के निमंत्रण पर वहां गए थे। कार्यक्रम के बाद आयोजकों ने अपने समाज के लिए भोज किया था। यह उनका संवैधानिक अधिकार था कि वे उसमें क्या खाएं। अजय राय ने इसके पहले चुनौती दी थी कि यदि उनके मछली खाने की कोई सत्य प्रमाणित फोटो या वीडियो हो तो उसे जनता के सामने लाया जाए। उन्होंने यह भी कहा था कि यदि उनके मछली खाने की बात प्रमाणित हो जाएगी तो वह राजनीति से संन्यास ले लेंगे। अजय राय ने यह भी कहा कि जहां तक माफिया से डरने का सवाल है, उनके भाई अवधेश राय की हत्या के बाद उन्होंने किसी माफिया के सामने सिर नहीं झुकाया। करीब 32 सालों तक न्याय के लिए अदालतों में लड़ते रहे। यूपी में अगले साल चुनाव हैं और उसके पहले अभी से सियासत तेज होने लगी है। मंगलवार को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के लखनऊ की अदालत पहुंचकर मानहानि का केस करने की प्रक्रिया शुरू की तो राजधानी में राजनीतिक हलचलें तेज हो गईं। अजय राय के इस कदम से अब भाजपा और कांग्रेस के बीच बयानबाजी और तेज होने की संभावना है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय 23 अगस्त को अयोध्या पहुंचे थे। उनके साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव और पूर्वांचल प्रभारी अभिषेक दत्त और प्रदेश प्रवक्ता अखिलेश सिंह भी थे। इन नेताओं ने हनुमानगढ़ी में दर्शन–पूजन किया और हनुमान चालीसा का पाठ किया। आरोप है कि अजय राय के तारून में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कथित मछली भोज का आयोजन किया गया। भाजपा नेताओं ने इसे लेकर कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। भाजपा नेताओं ने सावन के पवित्र महीने में कथित मछली भोज के आयोजन को सनातन आस्था का अपमान बताते हुए कांग्रेस की मानसिकता पर सवाल उठाए। वहीं, 24 अगस्त को रायबरेली की जनसभा में सीएम योगी आदित्यनाथ ने इसे लेकर कांग्रेस पर तंज कसा था। उन्होंने कहा था कि सावन महीने में अयोध्या में मछली का लुत्फ उठाया गया। इसके साथ ही सीएम ने अजय राय पर अपने भाई की हत्या के बाद एक माफिया के सामने घुटने टेक देने का भी आरोप लगाया था। सीएम के इन आरोपों पर अजय राय ने कहा कि वह एक सच्चे सनातनी और बाबा विश्वनाथ के अनन्य भक्त हैं।

उन्होंने चुनौती दी थी कि यदि उनके मछली खाने का कोई भी फोटो या वीडियो हो तो उसे देश के सामने उजागर किया जाए। अजय राय ने यह भी स्पष्ट किया था कि वह कार्यक्रम निषाद समाज का था और उन्होंने अपने समाज के लिए व्यवस्था की थी।

इटवा चौराहे पर अतिक्रमण के खिलाफ चला प्रशासन का बुलडोजर

दो दिन से जारी अभियान में सड़क की पटरियों से हटाया गया अवैध कब्जा, आगे भी कार्रवाई जारी रखने के निर्देश

संवाददाता–इटवा (सिद्धार्थनगर)। लंबे समय से अतिक्रमण की समस्या से जूझ रहे इटवा चौराहे पर आखिरकार प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए अभियान शुरू कर दिया। निकाय प्रशासन, तहसील और पुलिस की संयुक्त टीम ने सोमवार के बाद मंगलवार को भी सड़क की पटरियों पर किए गए अवैध कब्जों को हटाया। कार्रवाई के दौरान जेसीबी और ट्रैक्टर–ट्रॉली की मदद से अतिक्रमण हटाकर कब्जे में रखी सामग्री को मौके से हटाया गया।

इटवा चौराहे और आसपास की सड़कों पर पटरियों तक दुकानों और अन्य सामान फैल जाने से यातायात प्रभावित हो रहा था। सड़क के किनारे अवैध कब्जों के कारण आए दिन जाम की स्थिति बनी रहती थी। समस्या को देखते हुए प्रशासन ने पहले अतिक्रमणकारियों को चेतावनी दी थी, जिसके बाद अभियान चलाया गया।

मंगलवार को ईओ नगर पंचायत शिव कुमार, नायब तहसीलदार इटवा बिन्द्रेश गुप्ता और थानाध्यक्ष अनिल कुमार दुबे पुलिस बल के साथ चौराहे पर पहुंचे। नगर पंचायत कर्मियों की मौजूदगी में जेसीबी से सड़क की पटरी पर किए गए अतिक्रमण को हटाया गया और हटाई गई सामग्री को ट्रैक्टर–ट्रॉली में लादकर ले जाया गया।

ईओ शिव कुमार ने बताया कि अतिक्रमण के खिलाफ दो दिनों से अभियान चलाया जा रहा है। यह कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। सरकारी भूमि और सड़क की पटरी पर किए गए किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को हटाया जाएगा।

प्रशासन की इस कार्रवाई से जहां अतिक्रमणकारियों में हड़कंप है, वहीं स्थानीय लोगों को सड़क और यातायात व्यवस्था बेहतर होने की उम्मीद जगी है।

पुलिस मुठभेड़ मे एक बदमाश गिरफ्तार, दूसरा फरार

संवाददाता–गोरखपुर। पिपराइच इलाके में मंगलवार की भोर में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। जंगल धूषण के पास चेकिंग के दौरान बाइक सवार दो बदमाशों ने पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दी। गोली लगने से कांस्टेबल हनुमान घायल हो गए। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश के बाएं पैर में गोली लग गई। घायल बदमाश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जबकि उसका दूसरा साथी अंधेरे का फायदा उठाकर जंगल की ओर भाग निकला। पुलिस फरार आरोपी की तलाश में जंगल में कांबिंग कर रही है। जंगल धूषण क्षेत्र में हुई। पुलिस के अनुसार थानाध्यक्ष पिपराइच पुलिस टीम के साथ संदिग्ध वाहनों और व्यक्तियों की चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान एंटी थेफ्ट टीम के प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार राय, हेड कांस्टेबल मो. मोहसिन खान, धर्मेन्द्र नाथ तिवारी, नितेश बहादुर सिंह, रमेश कुशवाहा, भूपेन्द्र यादव और अंकित कुमार सिंह सरकारी वाहन से मौके पर पहुंचे। इसके बाद दोनों टीमों ने संयुक्त रूप से चेकिंग शुरू की।

इसी दौरान पादरी बाजार की ओर से बाइक पर सवार दो संदिग्ध आते दिखाई दिए। पुलिस टीम ने उन्हें रुकने का इशारा किया तो बाइक सवार बदमाशों ने यू–टर्न लेकर भागने का प्रयास किया। इसी दौरान उनकी

बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई। पुलिस ने दोनों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन एक बदमाश ने पुलिस टीम पर तमंचे से फायर कर दिया। फायरिंग में कांस्टेबल हनुमान घायल हो गए।

पुलिस टीम ने दोबारा बदमाश को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी, लेकिन उसने पुलिस की बात नहीं मानी। इसके बाद पुलिस ने आत्मरक्षार्थ जवाबी फायरिंग की। पुलिस की गोली बदमाश के बाएं पैर में लगी और वह घायल होकर मौके पर गिर पड़ा। पुलिस ने उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया। वहीं उसका साथी अंधेरे का फायदा उठाकर जंगल की ओर भाग गया।

पकड़े गए बदमाश की पहचान तिवारीपुर थाना क्षेत्र के निजामपुर मोहल्ला निवासी मुमताज अहमद उर्फ राजू (30) के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार वह शातिर चोर है और पिपराइच थाना क्षेत्र में हाल में हुई चोरी की एक घटना में भी उसकी संलिप्तता सामने आई है। उसके पास से तमंचा, कारतूस, बाइक और चोरी का सामान बरामद किया गया है। फरार बदमाश की पहचान कोतवाली थाना क्षेत्र के बक्शीपुर निवासी सरफराज के रूप में बताई गई है। पुलिस के मुताबिक सरफराज के खिलाफ शहर के अलग–अलग थानों में 14 मुकदमे दर्ज हैं। उसकी तलाश में पुलिस टीम जंगल और आसपास के संभावित ठिकानों पर कांबिंग कर रही है। मुठभेड़ में घायल मुमताज को पुलिस ने प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पिपराइच पहुंचाया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

एमआर होम से 4 मानसिक रूप से कमजोर युवक लापता

संवाददाता–गोरखपुर। नार्मल पुलिस चौकी के पास स्थित एमआर होम से मंगलवार सुबह चार युवक अचानक लापता हो गए। चारों मानसिक रूप से कमजोर बताए जा रहे हैं और यहां लावारिस अवस्था में मिले मानसिक रोगियों को रखा जाता है। सुबह उनके गायब होने के बाद काफी देर तक खोजबीन की गई।

बेदखली सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम मोहम्मद हुसैन पुत्र अकील मोहम्मद, निवासी ग्राम–सतवाढ़ी, तप्पा कोड़री परगना बांसी पूरव थाना जोगिया उदयपुर जिला–सिद्धार्थनगर, का निवासी हूं मै अपने पुत्र कादिर उर्फ निजाम गलत संगत में पड़कर गलत रास्ता अख्तियार कर लिया है तथा आए दिन घर–परिवार की मान–मर्यादा एवं इज्जत को तार–तार कर रहा है और विभिन्न प्रकार से गैर कानूनी गतिविधियों में लिप्त रहता है।

जिससे उसके चाल–चलन व गलत संगत से आजीज आकर अपने पूरे परिवास से सलाह मसवरा करके अपनी चल व अचल संपत्ति से दिनांक 25.08.2026 से बेदखल कर रहा हूं। उसके किसी भी कार्य व्यवहार या समाज के लोगों एवं समाजा के प्रति संलिप्त या किसी भी लेन–देन से मेरा व मेरे परिवार का कोई वास्ता सरोकरार नही होंगा।

प्रकाशन इस लिए करा रहा हूं कि वक्त जरूरत काम अझये।

प्रार्थी
मोहम्मद हुसैन
पुत्र अकील मोहम्मद

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील

अदालत– श्रीमान अपर आयुक्त (प्रशासन) बस्ती मण्डल महोदय बस्ती जिला–बस्ती

अपील सं0–C202517000000359

रामसेवक
बनाम
सुमित्रानन्दन पाण्डेय आदि

1. सुमित्रानन्दन पाण्डेय 2. सवितानन्दन पाण्डेय पुत्रगण गणेशदत्त पाण्डेय निवासीगण ग्राम बगही तप्पा भाटिनपार परगना विनायकपुर तहसील नौगढ़ जिला सिद्धार्थनगर

–उत्तरवादी प्रथम वर्ग

3. अध्यक्ष भूमि प्रबन्धक समिति जरिये ग्राम प्रधान बगही तप्पा भाटिनपार परगना विनायकपुर तहसील नौगढ़ जिला सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 11–09–2026

अपील बनराजी अदालत मुकाम बस्ती

मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्ट

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 11 महीना 09 सन 2026 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है। अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 01 माह 09 सन 2026 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)

वाद सं0– 3103/2026

कं0 वाद सं0–T202617140313103

धारा 116 उ0प्र0रा0सं0–2006

अदालत– श्रीमान अति0 अधिकारी प्रथम बस्ती जिला–बस्ती

मुख्तार प्रसाद आदि
बनाम
गोपाल प्रसाद आदि

1. गोपाल प्रसाद 2. राजेश कुमार 3. राधेश्याम पुत्रगण शारदा प्रसाद 4. गुड्डी पत्नी घनश्याम 5. अंकित पुत्र घनश्याम 6. संतोष कुमार पुत्र आद्या प्रसाद साकिन गडौना तप्पा कोरऊ परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 17–09–2026

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 17 माह 09 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 01 माह 09 सन 2026 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

वाद के निपटारे के लिये सम्मन (आदेश 5 के नियम 1 और 5 व्या0प्र0 संहिता 1908)

मूलवाद संख्या 03/88

न्यायालय– श्रीमान अपर सिविल जज (जू0डि0) बांसी कक्ष सं0–1 जिला– सिद्धार्थनगर

रूनमती
बनाम
बनारसी

3/1 बंशराज वालिग 3/2 राजाराम वालिग 3/3 पारसनाथ वालिग 3/4 धर्मदत्त वालिग पुत्रगण मंगरू 3/5 श्रीमती दुःखना उम्र 70 वर्ष पत्नी मंगरू 3/6 रामबली वालिग 3/7 विनोद वालिग पुत्रगण मंगरू साकिन कोल्हुई तप्पा बजहर परगना बांसी पूरव तहसील बांसी जिला सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 01–10–2026

प्रतिवादी ने आपके विरूद्ध के लिये वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में दिनांक **01–10–2026** को दिन में 10 बजे वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये समन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे अधिवक्ता प्लीडर द्वारा उप संजात हो सकते हैं। जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हों और जो बात से सम्बंधित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके न्यायालय में आपके उप संजात के लिये जो दिन नियत किया गया है वह इस वाद के अन्तिम निपटारे के लिये नियत दिन है। इसलिये आपको उस दिन अपने उन सब साक्षियों को या उन सब दस्तावेजों को पेश करने के लिये तैयार रहना चाहिये जिन पर आप अपनी प्रतिरक्षा के लिये निर्भर रहना चाहते हैं।

आपको सूचित किया जाता है कि यदि अगर ऊपर बतायी गयी तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।

यह आज तारीख को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

न्यायाधीश

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती

वाद सं0–486/2024

श्रीशचन्द्रधर द्विवेदी
बनाम
प्रवीश चन्द्रधर द्विवेदी आदि

1– प्रवीश चन्द्रधर द्विवेदी उम्र लगभग 55 वर्ष पुत्र हरिश्चन्द्र द्विवेदी निवासी मौजा राजघाट हर्रैया तप्पा पुरैना परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती

–प्रतिवादी प्रथम वर्ग

तारीख पेशी 15–09–2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 15 माह 09 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब (आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला–बस्ती

वाद सं0–504/2025

मु0 रहीम आदि
बनाम
जटाशंकर आदि

1– जटाशंकर पुत्र ओंकारनाथ साकिन राजपुर बैरिहवा तप्पा कनैला परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती

–प्रतिवादी प्रथम वर्ग

2. मुस्तफा उम्र लगभग 33 वर्ष पुत्र रफीक अहमद साकिन राजपुर बैरिहवा तप्पा कनैला परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती

–प्रतिवादी द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 04–11–2026

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 04 माह 11 सन 2026 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com